॥ हरिः ॐ ॥

बालकों के मोटा

लेखक : मुकुल कलार्थी

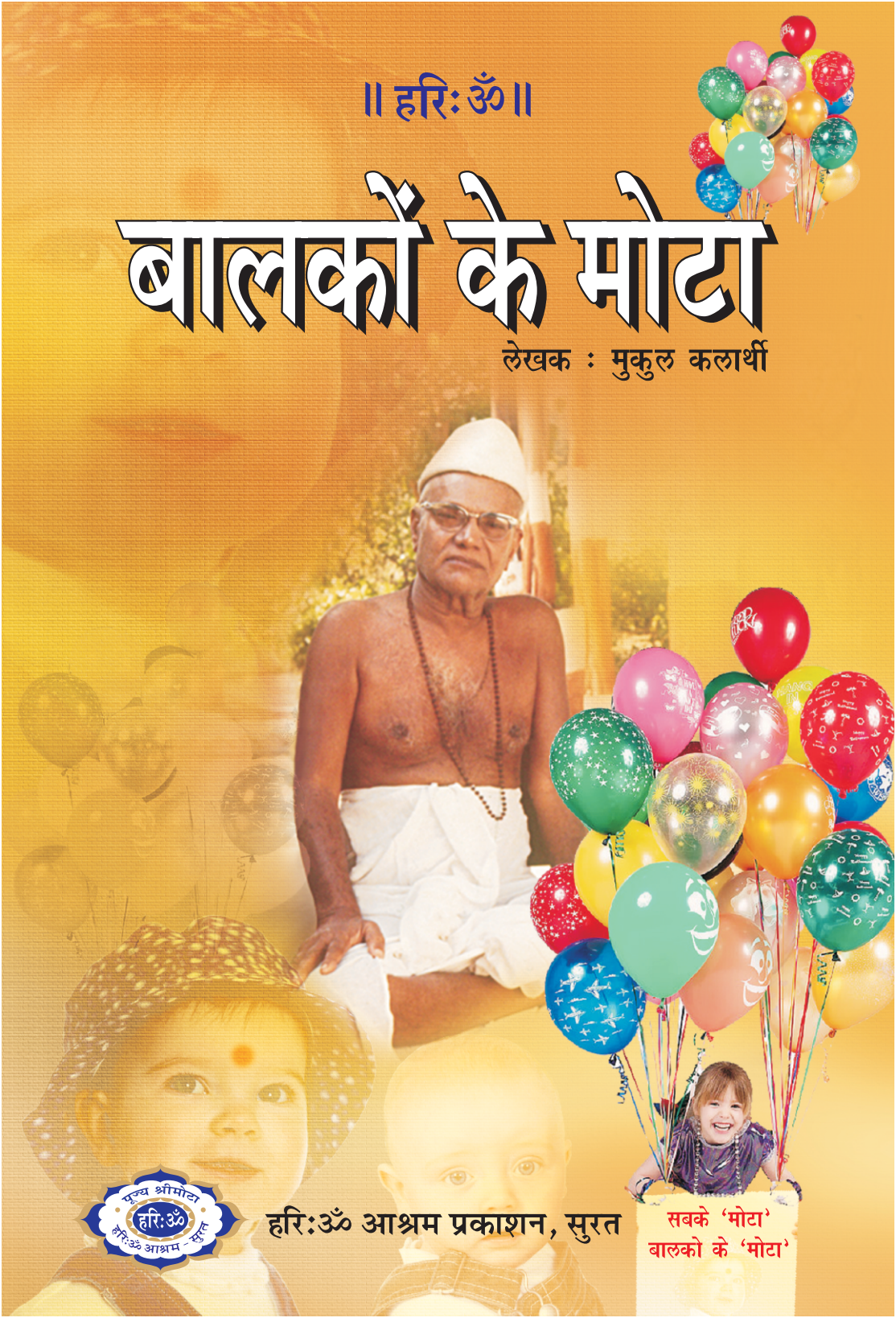

हरिः ॐ आश्रम प्रकाशन, सुरत

सबके 'मोटा'
बालको के 'मोटा'

॥ हरिः ॐ ॥

बालकों के *मोटा*

(गुजराती : बाळकोना *मोटा*)

लेखक : मुकुल कलार्थी
अनुवादक : डॉ. कविता शर्मा
सहायक : डॉ. घनान्द शर्मा 'जदली'

हरिः ॐ आश्रम प्रकाशन, सूरत

❑ **प्रकाशक :**
(पूज्य श्रीमोटा) हरि:ॐ आश्रम, कुरुक्षेत्र,
जहाँगीरपुरा, सूरत-३९५००५,
भ्रमणभाष : +९१ ९७२७७ ३३४००
Email : hariommota1@gmail.com
Website : www.hariommota.org

© सर्वाधिकार - प्रकाशकाधीन

❑ तृतीय संस्करण : वर्ष २०२२, वसंतपंचमी, वि. संवत २०७८,

❑ प्रतियाँ : ११०००

❑ पृष्ठ संख्या : ८०

❑ मूल्य : रु. १५/-

❑ प्राप्तिस्थान :

(१) हरि:ॐ आश्रम, सूरत-३९५००५

(२) हरि:ॐ आश्रम,
नडियाद-कपडवंज रोड, जूना बिलोदरा, पो.बो.नं. ७४,
नडियाद-३८७००१ - भ्रमणभाष : +९१ ७८७८० ४६२८८

❑ टाइपसेटिंग : **अर्थ कॉम्प्यूटर**
२०३, मौर्य कोम्प्लेक्ष, सी.यु.शाह कॉलेज के सामने,
इन्कमटैक्स, अहमदाबाद-३८००१४, भ्रमणभाष : ९३२७०३६४१४

❑ मुद्रक :
साहित्य मुद्रणालय प्रा. लि.
सिटी मिल कम्पाउन्ड, कांकरिया रोड, अहमदाबाद-३८००२२
दूरभाष : (०७९) २५४६९१०१

॥ हरिः ॐ ॥

निवेदन

यह छोटी सी पुस्तिका में पूज्य श्रीमोटा के जीवन का संपूर्ण रूप से, सरल भाषा में वर्णन है, जिसे बच्चें, नवयुवान एवं वयस्क, हर उम्र के लोगों के लिए इसका अभ्यास करना सरल है ।

पिछले कुछ समय से हरिः ॐ आश्रम, सूरत में भारत की राष्ट्रभाषा में पूज्य श्रीमोटा के कई पुस्तकों का अनुवाद उपलब्ध है । यह नीति को कायम रखते हुए इस पुस्तक का तीसरा संस्करण भारतीय समाज के करकमलों में अर्पण करते हैं ।

इस प्रकाशन का हिन्दी भावानुवाद डॉ. कविता शर्मा ने पूज्य श्रीमोटा के प्रति अत्यंत प्रेमभक्तिभाव से सद्‌भावपूर्वक किया है । उनके हम अति आभारी हैं ।

इस प्रकाशन का संपूर्ण मुद्रणकार्य श्री श्रेयसभाई पंड्या, साहित्य मुद्रणालय, अहमदाबाद ने भी पूज्य श्रीमोटा के प्रति अत्यंत प्रेमभक्तिभाव से सद्‌भावपूर्वक किया है । हम उनके अत्यंत आभारी हैं ।

दि. ५-०२-२०२२ **– ट्रस्टीगण**

वसंतपंचमी वि. संवत-२०७८

अनुक्रमणिका

१. सुनिए श्रीमोटा की बातें ७
२. मुझे भी बड़ा आदमी बनना है ८
३. काम करने का आनंद ११
४. तुम्हारा काम मुझे अच्छा लगता है १३
५. मेहनत के अनुसार मजदूरी दो १४
६. गरीब की बात कौन सुने? १६
७. गाय नहीं बेचने दी १७
८. पाठशाला में सफाई का काम करते हुए पढ़ाई २१
९. चार अंग्रेजी कक्षाएँ डेढ़ साल में २३
१०. इन्स्पेक्टर का मन जीत लिया २५
११. पहले मेरा काम देखें, फिर रखें २७
१२. मुझ से झूठ का व्यापार नहीं होगा! ३०
१३. परायों को अपना बनाया ३४
१४. संत ने सहायता की ३६
१५. दायित्वपूर्ण कालिजजीवन ३९
१६. डेढ़ आने में भोजन ४१
१७. सिनेमा देखना बंद किया ४२
१८. देश की आज़ादी के लिए कूद पड़े ४४
१९. नामस्मरण का चमत्कार ४७
२०. सद्गुरुओं का समागम ५०
२१. अखण्ड नामस्मरण ५१
२२. हरि ने लाज रखी ५३
२३. दिल जीत लेनेवाला नौकर ५७
२४. चोर ने गहने लौटाए ६१
२५. हरि:ॐ आश्रम ६६
२६. श्रीमोटा का अनोखा कार्य ६८
२७. जीवन धन्य किया ७०

बालकों के *मोटा*

'मुझे समाज को ऊपर उठाना है ।'★

– मोटा

'जीवनदर्शन', १०वी आवृत्ति, पृ. ३८२

★समाज में साहस, हिंमत, शौर्य, पराक्रम, धीरज, सहनशीलता, प्रामाणिकता, निष्ठा, उदारता आदि दैवी गुणों विकसित हों, साथ-साथ भगवान प्रति भक्ति की भावना भी विकसित हो ।

(१) सुनिए श्रीमोटा की बातें

आप सभी ने श्रीमोटा का नाम सुना ही होगा ।
उनका नाम था चुनीभाई ।
परन्तु सभी उन्हें 'मोटा' कहकर बुलाते ।
मोटा के पिताजी का नाम आशाराम भगत था ।
मोटा की माताजी का नाम सूरजबा था ।
वडोदरा जिले में सावली नाम का गाँव ।
मोटा का जन्म सावली गाँव में हुआ था ।
ई. स. १८९८ के सितम्बर की चौथी तारीख ।
भाद्रपद कृष्ण पक्ष की चतुर्थी, श्रीमोटा का जन्मदिन ।
आशाराम भगत के चार बेटे थे ।
चुनीभाई के बड़े भाई जमनादास, चुनीभाई से छोटे मूलजीभाई और सोमाभाई ।
आशारामबापा रंगरेजी का धंधा करते थे ।
आशारामबापा बाद में पंचमहाल जिले के कालोल नामक गाँव में रहने लगे थे ।
कुटुम्ब की स्थिति ठीक न थी ।
पिता की कमाई कम और कुटुम्ब बड़ा ।
परन्तु माता सूरजबा मेहनती थीं ।
गाँव के सुखी कुटुम्बों में घरकाम करने जातीं ।
किसी का अनाज पीसने का काम करतीं ।
कूटने का काम भी करतीं ।

इस प्रकार सूरजबा मजदूरी का काम करतीं थीं ।
इससे कुटुम्ब को थोड़ा बहुत सहारा मिल जाता था ।
ऐसे गरीब कुटुम्ब में जन्मे चुनीभाई 'मोटा' बने ।
सुनिए, अब श्रीमोटा की प्रेरक बातें ।

• • •

(२) मुझे भी बड़ा आदमी बनना है

आशारामबापा को हुक्का पीने की आदत थी ।
इसके लिए बार-बार अंगारे चाहिए ।
इसलिए घर के आँगन के पास उपलों को सदा जलते हुए रखते ।
कालोल गाँव में सिपाही रात को चक्कर लगाने निकलते ।
आशाराम भगतजी के आँगन में थकान मिटाने बैठते ।
कोई सिपाही हुक्के के दोचार दम भी लगाते ।
एक रात दो सिपाही फेरी लगाते हुये वहाँ आए ।
भगतजी के पास बैठे ।
बातों ही बातों में एक सिपाही ने पूछा :
'अरे भगत ! बरामदे की चारपाई पर कौन सो रहा है ?'
भगत ने उत्तर दिया :
'मेहमान है ।'
उस सिपाही ने पूछा :

'पुलिसचौकी को खबर क्यों नहीं दी ?'

उस जमाने में चोरी करनेवाली कुछ प्रसिद्ध जातियाँ थीं । यदि कोई मेहमान उनके यहाँ आए तो उसकी खबर पुलिस-चौकी को देना आवश्यक था ।

भगतजी ने कहा :

'हमें ऐसी खबर देने की जरूरत नहीं है ।'

यह सुनते ही न जाने सिपाही को गुस्सा आ गया ।

वह भगतजी को बेहद मारने लगा ।

मारते-मारते पुलिसचौकी तक घसीटते हुए ले गया ।

किशोरवय के **मोटा** बरामदे में ही सो रहे थे ।

इस घटना को देखकर वे स्तब्ध हो गए ।

पिता की ऐसी स्थिति नहीं देख पाये ।

इतने में ही **मोटा** को कुछ उपाय सूझा ।

वे नागरवाड़ा की ओर दौड़कर चले गए ।

नागरवाड़ा में रावसाहब मनुभाई रहते थे । वे भगत के कुटुम्ब को पहचानते थे । सूरजबा उनके घर अनाज पीसने और कूटने का काम करती थीं ।

मोटा ने आधी रात में दरवाजे को जोर से खटखटाया ।

रावसाहब भौंचक्का जाग गए ।

मोटा ने सिसकते-सिसकते कहा :

'साहब, मेरे पिता को बचाइए । कुछ भी अपराध किये बिना सिपाही ने मेरे पिताजी को बहुत मारा । घसीटते हुए पुलिसचौकी ले गए ।'

रावसाहब ने तुरंत घोड़ागाड़ी जुतवाई । **मोटा** को लेकर वे पुलिसचौकी गए ।

उन्होंने भगतजी को छुड़वाया ।

यह सब देखकर **मोटा** सोचने लगे :

'दुनिया में गरीब की दशा खराब है । गरीब को सभी दुत्कारते रहते हैं । उसका अपमान करते हैं ।'

'हम भले ही गरीब हों ।'

'पर हमारा कोई अपमान न करे, इसके लिए हमें क्या करना चाहिए ?'

विचार करते हुए **मोटा** की समझ में आया :

'तालुका के मामलतदार को सभी सलाम करते हैं ।'

'बड़े-बड़े लोग उन्हें मान देते हैं ।'

'मुझे भी ऐसा बड़ा आदमी बनना है ।'

'इसके लिए क्या करना चाहिए ?'

'बहुत सारी पढ़ाई करनी चाहिए ।'

मोटा को किशोरावस्था में पढ़ने की लगन जागी ।

भले ही असुविधा हो ।

भले ही दुःख सहने पड़ें ।

सब कुछ सहन करते हुए आगे पढ़ना है ।

मोटा ने ऐसा दृढ़ निश्चय किया ।

मुझे भी बड़ा आदमी बनना है ।

● ● ●

(३) काम करने का आनंद

'**मोटा**' उम्र में छोटे थे ।

परन्तु समझ उनकी बड़ों जैसी थी ।

माँ बेचारी लोगों का अनाज पीसने, कूटने का काम करतीं । दूसरों के घर घरकाम करने जातीं ।

मोटा सोचने लगे :

'मैं बैठा रहूँ यह कैसे चलेगा ?'

'घर में कुछ मदद करनी चाहिए !'

'चलो, मैं मज़दूरी करने चलूँ ।'

एक बार **मोटा** को पता चला कि ईंटों के भट्ठे पर मज़दूरी मिलती है ।

मोटा वहाँ अकेले पहुँच गए ।

देखभाल करनेवाले भाई ने पूछा :

'ए लड़के, यहाँ क्यों आए हो ?'

मोटा ने उत्तर दिया :

'काम करने ।'

वह भाई बोला :

'देख लड़के, यहाँ तुम्हारे लायक काम नहीं है । तुम गरम ईंटें उठा पाओगे ?'

मोटा को तो काम से मतलब था। घर में मददगार बनना था। यों हिंमत हार जाएँ ऐसे वे न थे। **मोटा** हिंमत के साथ बोले :

'मैं गरम गरम ईंटें उठाऊँगा ।'

छोटे लड़के का उत्साह देखकर वह भाई बोला :

'अच्छा, तो आज से काम में लग जाओ । देखो, बीच में से भाग मत जाना ।'

ईंटों की भट्ठी में अन्य मजदूर भी काम कर रहे थे । **मोटा** उनके साथ काम में जुट गए ।

मोटा सबके साथ गरम-गरम ईंटें उठाने लगे ।

ईंटों की भट्ठी यानी धधकती हुई आग !

उसमें से गरम-गरम ईंटें निकालना कोई खेल न था । गरम ईंटें उठाते हुए हाथ जलते । कितनी ही बार अंगारे की तरह चिपक जाते ।

नन्हें **मोटा** के हाथ जल जाते । पर पीछे हटें वे कोई दूसरे ।

मोटा गुपचुप दुःख सहने लगे ।

बड़े लोगों जैसा ही काम करते थे ।

शाम को काम बंद होता तब देखभाल करनेवाले भाई सभी की ईंटें गिनते ।

ईंटों के अनुसार पैसा देते ।

मोटा पैसे लेकर घर दौड़ते हुए जाते ।

हथेली और उंगलियाँ सिककर-जलकर लाल-लाल हो जाती थीं ।

मोटा उस ओर ध्यान ही न देते ।

मोटा को तो मात्र काम करने का आनंद था ।

घर में थोड़ी-बहुत मदद करने का आनंद ।

● ● ●

(४) तुम्हारा काम मुझे अच्छा लगता है

मोटा कई बार राजगीर का काम करनेके लिए तैयार होते ।

छोटे से प्यारे लड़के को देखकर राजगीर बोला :

'लड़के, काम ठीक से करना । खेलना-बेलना नहीं ।'

मोटा उत्साह से रेती, सिमेन्ट आदि इकट्ठा करते । उचित मात्रा में पानी डालते । सुन्दर ढंग से घोल तैयार करते ।

जरा भी आलस किये बिना वे ईंटें उठाते । ठीक से राजगीर के आगे रखते ।

राजगीर 'छोटे से आदमी' का काम देखकर खुश-खुश हो जाता ।

शाम को काम पूरा होता ।

रोजगीर **मोटा** से बोला :

'लड़के, तुम्हारा काम मुझे अच्छा लगता है। कल काम पर आ जाना।'

मोटा हकार में सिर हिला देते ।

मज़दूरी के पैसे लेकर घर जाते ।

बहुत खुश हो कर जाते ।

मानो कि कहीं खेल खेलकर घर जा रहे हों ।

काम में भी आनंद लूटते ।

जिससे मज़दूरी भार-जैसी न लगती ।

● ● ●

(५) मेहनत के अनुसार मज़दूरी दो

आसपास के खेतों में कपास बीनने का समय आता ।

किसान कपास बीनने हेतु मज़दूरों को रखते ।

मोटा भी काम करने खेत पर पहुँच जाते ।

मोटा डोंड़ा बीनने का काम बड़े उत्साह से करते ।

छोटे-छोटे हाथ तेजी से काम करते ।

मोटा बड़े से बड़ों को भी पीछे छोड़ देते ।

मज़दूर तो चालाक हो गये होते हैं ।

थोड़ा काम करें और बीड़ी पीने बैठ जाएँ । बीड़ी पीते-पीते गप्पेबाजी करते ।

इतना ही नहीं मज़दूर तो काम भी धीरे-धीरे करते ।

परन्तु बालक **मोटा** कामचोरी न करते ।

काम यानी काम ।

मोटा मानते थे :

'हमें सौंपा गया काम यदि हम ठीक ढंग से न करें तो भगवान खुश न होंगे ।'

'जैसी दानत वैसी बरकत ।'

'शुद्ध दानत से कर्तव्य-पालन करने से फल भी अच्छा मिलता है ।'

बालक **मोटा** के ऐसे विचार थे ।

मोटा दिनभर उमंग से काम करते ।

शाम तक डोंड़ा का ढेर बना देते ।

किसान बहुत खुश हो जाते ।

मोटा की पीठ थपथपाकर किसान कहते **:**

'शाबाश! बालक, शाबाश !'

परन्तु किसान मज़दूरी देने में पक्षपात करते ।

मोटा को मज़दूरी कितनी देते ?

छोटे लड़के को दी जाए उतनी ।

खाना भी उसी हिसाब से देते ।

मोटा कई बार किसान से कहते **:**

'आप मुझे शाबाशी तो देते हो, परन्तु मज़दूरी तो लड़के के हिसाब से देते हो ।'

'मेरा काम देखो और मजदूरी दो ।'

'सारे दिनभर बड़ों जैसा काम करता हूँ । इससे भूख भी जमकर लगती है' न ?

'इस विषय में सोचो तो अच्छा हो ।'

परन्तु छोटे-से लड़के की बात कौन सुने ?

किसान बात को हँसी में उड़ा देते ।

● ● ●

(६) गरीब की बात कौन सुने ?

खेत में बुआई का समय आता ।

मोटा खेत में मज़दूरी करने दौड़ जाते ।

किसान बालक **मोटा** को देखकर बोले :

'लड़के, सुनो ! पौधे रोपने में ढीलापन नहीं चलेगा ।'

'बरसात मूसलाधार बरसता हो । पर, काम ठीक ढंग से करते हुए रहना पड़ेगा ।'

'इसमें छोटे लड़के का काम नहीं ।'

मोटा विनयपूर्वक बोले :

'मुझे काम देकर देखें । काम देखकर मज़दूरी देना ।'

किसान कहता :

'ठीक है । पर तुम्हें बड़ों की तरह काम करना होगा ।'

'बड़ों की पंक्ति में रहकर काम करना होगा । उन लोगों जितना ही काम करना होगा ।'

'बोलो, हो तैयार ?'

मोटा ने खुश होकर हाँ कहा ।

धान का पौधा बोना यानी क्या ?

दिनभर पानी से भरी हुई क्यारी में खड़ा रहना पड़ेगा ।

कितनी ही भारी मूसलाधार बरसात भी बरसती होगी ।

दिनभर खड़े पैरों पर झुककर पौधे रोपने पड़ते हैं ।

बालक **मोटा** दिनभर मूसलाधार बरसात में पैर धँस जाएँ

ऐसे कीचड़ में काम करते ।

शाम तक **मोटा** थककर चूर-चूर हो जाते ।

दिन में किसान सभी मजदूरों को खाना देता ।

बड़ी उम्र के मजदूरों को दो मोटी रोटियाँ और सब्जी मिलती ।

मोटा तो छोटे लड़के थे ।

किसान उन्हें मात्र एक मोटी रोटी और थोड़ी सी सब्जी देता ।

मोटा ऐसे भेदभाव को देखकर कहते :

'आप काम तो बड़ों जितना लेते हो ।'

'खाना क्यों छोटे बालक जितना देते हो ।'

किसान ने बेरुखी से उत्तर दिया :

'यह तो रिवाज के अनुसार दिया जाएगा ।'

'तुम्हारे अकेले के कारण रिवाज नहीं बदले जा सकते ।'

'तुम्हें ठीक लगता हो तो रहो, नहीं तो चलते बनों ।'

मोटा को लगा :

'यह तो बेचारे गरीब का शोषण है ।'

'हमारी बात भले ही सच्ची हो, पर सुनेगा कौन ?'

• • •

(७) गाय नहीं बेचने दी

मोटा के घर एक गाय थी ।

गाय को बाँधने की जगह नहीं थी, इसलिए घर के पास रास्ते पर ही उसे बाँधी जाती थी ।

सूरजबा घर का काम करतीं और दूसरे घरों में भी काम करने जातीं। इससे गाय की देखभाल नहीं हो पाती थी।

एक दिन सूरजबा ने घर में कहा :

'अपना गुजारा बड़ी मुश्किल से हो पाता है, फिर गाय को कहाँ से खिलाएँगें ?'

'मैं भी दिनभर काम के बोझ से दबी रहती हूँ।'

'इसलिए मैं गाय की देखभाल नहीं कर पाती हूँ।'

'हम गाय को बेच दें तो अच्छा रहेगा।'

बालक **मोटा** बोले :

'माँ, यदि गाय तुम्हारा ही बालक होता तो ?'

'क्या तुम उसे बेच देतीं ?'

यह सुनकर माँ उत्तेजित हो उठी और बोलने लगी :

'मेरे बाप ! तुम्हें बोलबोल करने की बहुत खराब आदत है।'

'गाय को पालना आसान काम नहीं है। इसका तुमने विचार भी किया है, क्या ?'

'हमारे पास गाय को बाँधने की जगह भी नहीं है।'

'गाय के लिए हम घास भी नहीं ला सकते हैं।'

'गोबर और मूत्र से रास्ता बिगड़ता है। इसी कारण मुझे रोज लोगों की बातें सुननी पड़ती हैं।'

'इन सबका विचार करो।'

'अक्ल बिना की बात मत करो।'

'बेकार की बातें मत करो।'

मोटा ने माँ को शांति से कहा :

'माँ, तुम्हारी बात सच है ।'

'पर अब से सारी गंदगी मैं साफ करूँगा ।'

'गाय के लिए घास का चारा भी मैं ले आऊँगा ।'

'गाय को रोज नहलाऊँगा ।'

'बोलो माँ ! अब तो गाय को नहीं बेचोगी, न ?'

'गाय तो हमारी माता कहलाती है, उसकी तो पूजा करनी चाहिए ।'

माँ ने **मोटा** की बात हँसकर टाल दी और कहा :

'अब रहने दे अपनी डींग मारना ! देखती हूँ गाय की देखभाल तुम कैसे करते हो ।'

मोटा ने कहा :

'बोला हुआ करके दिखा दूँ तो मानना ।'

दूसरे ही दिन **मोटा** प्रातःकाल उठे ।

गोबर उठाकर एक तरफ ढेर कर दिया ।

रास्ते पर गाय के गोबर एवं मूत्र से बहुत गंदगी हो गई थी ।

मोटा ने उस जगह पर कोरी मिट्टी डाल दी ।

इससे सीलन भी कम हुई और साथ ही मक्खियाँ भिनभिनानीं कम हो गईं ।

अब केवल एक समस्या थी, घास कहाँ से लायी जाए ?

कालोल गाँव, तालुका का मुख्य केन्द्र । वहाँ व्यापार अच्छा चलता था ।

बड़े सवेरे आसपास के गाँवों से बैलगाड़ियाँ आतीं । बैलगाड़ियों में साग-सब्जी, अनाज आदि भरे होते ।

गाँव के सिवान पर गाड़ियाँ खुलतीं । गाड़ीवाले बैलों को खोल देते । घास के पूलों को खाने के लिए डालते, फिर बाजार में काम करने जाते ।

काम समाप्त कर गाँव के लोग लौट जाते । शाम को सारी बैलगाड़ियाँ चली जातीं ।

मोटा शाम को सिवान पर जाते । वहाँ बिना खाये के पूलों को इकट्ठे करते । उन सब की गठरी बाँधकर घर ले आते ।

पूले गाय को डालते ।

मोटा जिस शाला में पढ़ते थे, वहाँ किसानों के लड़के भी पढ़ने आते थे ।

मोटा की दोस्ती सभी विद्यार्थियों से थी ।

मोटा सुबह और शाम उन लड़कों के खेत में जाते । उनसे अनुमति लेकर खेत के किनारे उगी घास को काट लाते ।

गाय को ताजा हरी घास प्रेम से खिलाते ।

यह सब देखकर माँ बहुत खुश हो जातीं ।

• • •

(८) शाला में सफाई का काम करते हुए पढ़ाई

मोटा गाँव की प्राथमिक शाला में पढ़ते थे ।

मोटा घर में काम करते और स्कूल में पढ़ते भी थे ।

उनकी स्मरणशक्ति अच्छी थी । शाला में बहुत ध्यान से पढ़ते ।

मोटा सब कुछ जल्दी से सीख जाते थे ।

शिक्षक भी अच्छे थे । वे इस गरीब, मेहनती और होशियार विद्यार्थी पर प्रेम रखते थे ।

मोटा शाला में मात्र पढ़ते ही नहीं थे ।

मोटा पढ़ते और पढ़ाते भी थे ।

कक्षा में कितने ही विद्यार्थी पढ़ाई में कमजोर थे । **मोटा** उन्हें पढ़ने में मदद करते ।

मोटा बचपन से ही अधिक समझदार थे ।

'अन्य सभी वस्तु देने से घटती हैं, किन्तु विद्यादान जैसे-जैसे दूसरों को देते जाओ वैसे-वैसे बढ़ता जाता है ।'

उन्हीं दिनों, कालोल में अंग्रेजी शाला खुली ।

शाला नयी थी, इसलिए फीस भी रखी गई थी ।

मोटा आगे पढ़ना चाहते थे ।

परन्तु फीस कहाँ से लाएँ ? प्रारंभ में माफी भी कौन देगा?

घर से पिता फीस दें, ऐसा मुमकीन न था ।

जहाँ दृढ़ निश्चय हो, वहाँ भगवान मार्ग खोल देते हैं ।

मोटा प्रधानाध्यापक के पास गए ।

उन्होंने विनयपूर्वक अपनी गरीब स्थिति प्रधानाध्यापक को बतलाई ।

फिर **मोटा** ने नम्रता से कहा **:**

'साहब, मुझे शाला में पढ़ना तो है ।'

'इसलिए मुझ पर इतनी कृपा करें ।'

'मुझे शाला में सफाई का काम करने को दे दीजिए ।'

'इसमें से मैं फीस आदि का खर्च निकाल लूँगा ।'

प्रधानाध्यापक समझदार थे । उत्साही विद्यार्थी की बात से खुश हुए । उन्होंने **मोटा** को सफाई का काम सौंप दिया ।

मोटा ने दूसरे ही दिन से सफाई का काम शुरू कर दिया ।

मोटा शाला का भवन ठीक से बुहारते ।

बैन्चों, कुर्सियों, टेबिलों, पाट आदि सभी को झाड़कर ठीक से साफ करते ।

कहीं भी धूल दिखायी न देती ।

मोटा काम में जरा भी आलस नहीं करते ।

कभी-कभी **मोटा** को चपरासी का काम भी सौंपा जाता ।

मोटा उस काम को भी उत्साह से करते ।

मोटा में बचपन से ही एक बड़ा सद्‌गुण था **:**

'अपने हिस्से में जो भी काम आये उसे सच्चे दिल से और व्यवस्थित करना ।'

'काम करने में जरा भी आलस या प्रमाद न करते ।'

मोटा ऐसे सारे काम करते और पढ़ते भी ध्यान से ।

मोटा ठीक से समझते थे कि,

'पढ़ने के लिए मैं शाला में दाखिल हुआ हूँ ।'

'शाला में पढ़ने के लिए ही मैं सफाई का काम आदि करता हूँ ।'

'इसलिए मेरा प्रथम धर्म ध्यानपूर्वक पढ़ाई करना है ।'

'इसमें गलती नहीं करनी चाहिए, असावधानी नहीं चल सकती और बेदरकारी भी नहीं होनी चाहिए ।'

इसलिए **मोटा** बहुत मन लगाकर पढ़ाई करते ।

मोटा कक्षा में प्रथम रहते ।

• • •

(९) चार अंग्रेजी कक्षाएँ डेढ़ साल में

मोटा कालोल गाँव की अंग्रेजी शाला में पढ़ते थे ।

मोटा पढ़ते तो थे, किन्तु उन्हें बार-बार घर की गरीब स्थिति का विचार आ जाता ।

जल्दी-जल्दी पढ़ाई पूरी हो जाए तो कितना अच्छा ।

किसी नौकरी में लग जाऊँ तो माता-पिता की तकलीफों में कुछ राहत दे सकता हूँ ।

एक दिन **मोटा** के मन में विचार आया :

'प्रभुकृपा से दो-चार वर्ष कूद जाऊँ तो कितना अच्छा हो ! इतने वर्ष बच सकते हैं ?'

मोटा ने प्रधानाध्यापक से बात करने की सोची ।

मोटा में बचपन से ही एक बात की समझ स्पष्ट थी :

'हम कुछ भी कार्य शुभ उद्देश्य से करना चाहते हों, उसे प्रार्थनाभाव से प्रभुजी के चरणों में व्यक्त करते रहना चाहिए ।'

'इससे हमारे उस शुभ उद्देश्य का फल अच्छा आता है ।'

'अपने विरोधी के लिए भी मन में सद्भाव रखें और प्रार्थना करनी चाहिए ।'

'ऐसा करने से उसके साथ मित्रता हो जाती है ।'

विद्यार्थी **मोटा** ने अपने शुभ उद्देश्य को केन्द्र में रखा ।

दिल में प्रार्थना का भाव दृढ़ किया ।

इस तरह प्रधानाध्यापक के साथ संबंध स्थापित किया ।

मोटा प्रधानाध्यापक के घर जाते । बाजार से सब्जी आदि ले आते । घर के कामों में कुछ न कुछ मदद करते । बालकों के साथ खेलते ।

इससे प्रधानाध्यपक की पत्नी भी **मोटा** पर सद्भाव रखतीं ।

मोटा को कुछ न कुछ खाने को देतीं । घर के बच्चों-जैसा भाव रखतीं ।

ऐसा करते-करते **मोटा** घर के आदमी-जैसे ही हो गये ।

प्रधानाध्यापक भी **मोटा** को पढ़ने में मदद करते ।

मोटा ने एक दिन बात-बात में प्रधानाध्यापक से कहा :

'साहब, मुझे कम समय में अधिक कक्षाएँ एक साथ करनी हैं ।'

'कुछ वर्ष बचें तो पिताजी को जल्दी से मदद कर सकूँगा ।'

प्रधानाध्यापक इस दृष्टि से **मोटा** को पढ़ाने लगे ।

मोटा भी मेहनत से पढ़ने लगे ।

उन्होंने अंग्रेजी की चार कक्षाएँ डेढ़ वर्ष में पूरी कर डालीं ।

● ● ●

(१०) इन्स्पेक्टर का दिल जीत लिया

मोटा ने प्रधानाध्यापक की मदद से डेढ़ वर्ष में अंग्रेजी की चार कक्षाएँ पूरी कर डालीं ।

पर परीक्षा का क्या?

मोटा ने प्रधानाध्यापक से बात की ।

प्रधानाध्यापक ने उनसे कहा :

'मुझे परीक्षा लेने में कोई आपत्ति नहीं है । परन्तु इसके लिए शिक्षा-विभाग की मंजूरी लेनी पड़ेगी ।'

'इसकी सत्ता इन्स्पेक्टर साहब के पास होती है ।'

मोटा इस कठिनाई से मार्ग निकालने के लिए तत्पर हुए ।

मोटा इन्स्पेक्टर साहब के पास पहुँच गए ।

मोटा उनके पास जाकर प्रणाम कर खड़े रहे ।

इन्स्पेक्टर साहब ने सिर पर पगड़ी पहनी थी । इस पर **मोटा** का ध्यान गया ।

पगड़ी थोड़ी-सी फीकी लगी । **मोटा** ने विनयपूर्वक उनको कहा :

'साहब, एक बात कहूँ ? आपकी पगड़ी फीकी हो गई है । मुझे रंगने दीजिए । मैं सुंदर ढंग से रंग दूँगा ।'

साहब को लड़का पसंद आ गया । उन्होंने **मोटा** को पगड़ी रंगने दे दी ।

सावधानीपूर्वक **मोटा** ने पगड़ी को सुंदर ढंग से रंग डाला ।

मोटा साहब के पास गये और पगड़ी दी ।

साहब ने पगड़ी पहनकर देखी ।

वे बहुत खुश हो गये ।

साहब ने **मोटा** को धन्यवाद दिया । इतनी अच्छी तरह पगड़ी रंगने के लिए पैसे देने लगे ।

मोटा ने विनयपूर्वक पैसे नहीं लिये ।

साहब ने **मोटा** से कहा :

'लड़के, कुछ कामकाज हो तो कहना ।'

मोटा को भी यही चाहिए था । उन्होंने नम्रतापूर्वक साहब से प्रार्थना की :

'साहब, एक बिनती है । हमारे घर की स्थिति कमजोर है ।'

'इसलिए मैं चाहता हूँ कि कम समय में पढ़ाई पूरी कर पिताजी को मदद करने के लिए काम पर लग जाऊँ ।'

'मैंने मिडल स्कूल का सारा पाठ्यक्रम पूरा कर लिया है । अब अंतिम परीक्षा बाकी है ।'

'जिसकी सत्ता आपश्री के पास है ।'

'कृपा करके मुझे परीक्षा देने की अनुमति दें ।'

'मैं आपका आभार, कभी नहीं भूलूँगा ।'

साहब बोले :

'जाओ, घबराना नहीं । सब ठीक हो जाएगा ।'

एक दिन साहब शाला की मुलाकात लेने आए ।

उन्होंने प्रधानाध्यापक से **मोटा** की पढ़ाई के विषय में पूछा ।

प्रधानाध्यापक **मोटा** की पढ़ाई, उनके विनय, विवेक और कामकाज से खुश थे ।

प्रधानाध्यापक ने **मोटा** के विषय में बहुत अच्छा अभिप्राय दिया ।

इन्स्पेक्टर साहब को संतोष हुआ । उन्होंने **मोटा** की परीक्षा की व्यवस्था कर दी ।

मोटा ने बहुत अच्छी तरह से परीक्षा पास कर ली ।

• • •

(११) पहले मेरा काम देखें, फिर रखें

कालोल गाँव में अंग्रेजी चार कक्षा तक की ही शाला थी ।

पाँचवी कक्षा के लिए गाँव के बाहर जाना पड़ता था ।

माता-पिता ने **मोटा** से कहा :

'बेटा, अधिक पढ़कर क्या करोगे ? हम रहे गरीब आदमी ! इतनी पढ़ाई बहुत हो गई ।'

'अब कहीं कमाने लग जाओ । घर में दो पैसे की मदद होगी ।'

मोटा उम्र में छोटे थे पर समझदार अधिक थे । **मोटा** ने भी सोचा :

'पिताजी बेचारे कितना करेंगे ? माँ भी दूसरों के घरों में काम करके थक जाती है ।'

'अभी कुछ समय कुछ काम-धंधा कर लूँ । फिर पढ़ाई होती रहेगी ।'

मोटा नौकरी करने को तैयार हो गए । पिताजी उनको गोधरा ले गए ।

पिताजी को गोधरा में एक व्यापारी पहचानते थे । पिताजी उनके पास गए ।

पिताजी ने व्यापारी से घर की स्थिति के विषय में बात की । फिर पिताजी ने प्रार्थना करते हुए कहा :

'सेठजी, मेरे बेटे को अपनी दूकान में नौकरी पर रख लीजिये । बड़ी मेहरबानी होगी ।'

व्यापारी **मोटा** को देखकर बोले :

'भगत, आपका बेटा तो अभी बहुत छोटा है ! उसे नौकरी पर रखकर क्या करूँगा ?'

उसे काम भी कौन-सा दूँ ? वह काम नहीं कर पाएगा ।'

यह सुनकर **मोटा** ने दृढ़ निश्चय के साथ कहा :

'सेठजी, थोड़े दिन मेरा काम देख लें । ठीक लगे तो रख लीजिएगा ।'

व्यापारी ने **मोटा** को रख लिया ।

उसने **मोटा** को दुकान में झाड़ू लगाने का काम सौंपा । दूसरे छुटपुट काम भी सौंप दिये ।

मोटा रोज सुबह जल्दी से उठ जाते । दुकान की चाभी ले जाकर दुकान खोलते ।

सभी झाड़ पोंछकर ठीक से सफाई करते ।

मोटा ने व्यापारी की गद्दी पर चादर देखी । तकिये के गिलाफ आदि देखे ।

ये सभी बहुत मैले थे ।

स्याही के काले दागवाले थे ।

मोटा को छोटे से छोटा काम भी ठीक तरह से करना अच्छा लगता । इतना ही नहीं, **मोटा** तो व्यापारी का मन जीतना चाहते थे । तो ही सेठ नौकरी पर रखेंगे, न ?

मोटा रोज चादर, गिलाफ आदि धोते ।

एक भी सलवट न पड़े इस तरह बिछाते ।

मोटा सब कुछ साफ-सुथरा रखते ।

मोटा जैसे ही दुकान में प्रवेश करते दुकान को भावपूर्वक वंदन करते । कंकू, चावल, फूल नित्य चढ़ाते । मन में शुभ प्रार्थना करते ।

व्यापारी बालक **मोटा** का व्यवस्थित और सुघड़ काम देखता रहता ।

व्यापारी बहुत प्रसन्न हुआ ।

उसने **मोटा** को नौकरी पर रख लिया ।

पर वेतन कितना ?

मात्र पाँच रुपए महीने ।

उस समय में इतने भी बहुत कहलाते थे ।

● ● ●

(१२) मुझ से झूठ का व्यापार नहीं होगा!

मोटा व्यापारी के यहाँ व्यवस्थित हो जम गए ।

व्यापारी सोचने लगा :

'लड़का छोटा है पर होशियार और मेहनती है । उसमें कार्य कुशलता भी है । जिम्मेदारीवाला काम करे, ऐसा है ।'

इसलिए व्यापारी धीरे-धीरे **मोटा** को जिम्मेदारीवाला काम सौंपने को तैयार हुआ ।

गाँव से किसान अनाज की गाड़ियाँ लेकर आते ।

व्यापारी ने **मोटा** को बुलाया और कहा :

'लड़के, तुम्हें अनाज तौलना आता होगा । इन किसानों का अनाज तौलने बैठ जाओ । देखना, ठीक से तौलना । हमें नुकसान नहीं होना चाहिए । समझे न ?'

मोटा किसान का अनाज तौलने बैठ गए ।

मोटा सबका समान रूप से तौलते ।

छोटा हो या बड़ा, सभी का ठीक से तौलते ।

व्यापारी सामान्य रूप से एक मन पर दो-ढाई सेर अधिक अनाज ले लेते ।

वे इसे गलत न मानते ।

सेठ को लगा :

'यह लड़का मुझे लाभ हो, ऐसा ही तौलता होगा ।'

फिर भी एक दिन सेठ ने **मोटा** को बुलाकर कहा :

'लड़के, तुम्हें तौलने का तरीका बताता हूँ । इसे तुम ध्यान से देखो ।'

बाद में व्यापारी **मोटा** को तौलने का तरीका सिखाने लगा :

तराजू पर बड़ी चालाकी से डंडी मारनी चाहिए ।

सामनेवाले आदमी को इसका पता भी नहीं चलना चाहिए ।

आसानी से एक मन में दो से ढाई सेर अनाज अधिक आ सकता है ।

व्यापारी ने उस तरीके से तौलकर भी बतलाया ।

मोटा ने यह सब शांति से देखा, सुना ।

फिर **मोटा** तौलने के काम में लग गए ।

पर **मोटा** ने इस गलत तरीके का उपयोग न किया ।

सही माप के अनुसार ही **मोटा** अनाज तौलने के काम में लग गये ।

एक दिन एक किसान के मन में शंका हुई ।

'यह लड़का मुझे उल्लू तो नहीं बना रहा है ?'

'अधिक अनाज तौल लेता होगा !'

इसलिए वह किसान झगड़ा करने लगा :

'ए लड़के, जरा ठीक से अनाज को तौल करना !'

'इस तरह से अधिक अनाज कैसे ले सकते हो ?'

'क्या हमें बुद्धू समझ रखा है ?'

शोरगुल सुनकर व्यापारी वहाँ दौड़ा आया ।

उसने किसान को शान्त करते हुए कहा :

'भाई, क्यों चिल्ला रहे हो ?'

'जो कुछ भी हो, आप मुझ से कहो !'

किसान कुढ़कर बोला :

'लगता है कि यह लड़का जल्दी से अनाज तौलकर अधिक अनाज ले लेता है ।'

'इस प्रकार, आजकल का यह लड़का आँख में धूल झोंक-कर हमें चकमा दे डाले यह कैसे चल सकता है ? यह हराम का माल नहीं है । यह पसीने की कमाई है ।'

व्यापारी मन में घबराने लगा ।

'अरे, मैंने ही इस लड़के को गलत ढंग से अनाज तौलना सिखाया है ।'

'यह किसान अनाज को फिर से तौलने को कहेगा तो भंड़ा फूट जाएगा । अब क्या होगा ?'

'बेचारा गरीब लड़का झूठा समझा जाएगा ।'

व्यापारी बचाव करने हेतु से गला साफ करते हुए बोला :

'अरे पटेल, तुम तो भले हो । तुम्हारा एक दाना भी हराम का लेना, हम नहीं ले सकते ।'

'यह लड़का ऐसा करे, ऐसा नहीं है । मैं उसे पहचानता हूँ । वह हाथ का साफ है ।'

'जरा भी कम-ज्यादा तौले ऐसा नहीं है ।'

'आप क्या, भले ही छोटा लड़का क्यों न आए !'

'सबके साथ ठीक से व्यवहार करे, ऐसा लड़का है ।'

'आप जरा भी शंका न लाएँ ।'

'वजन के अनुसार ही उसने अनाज तौला है ।'

परन्तु किसान एक का दो न हुआ ।

उसने दोबारा अनाज तौलने को कहा ।

व्यापारी का जी घबराने लगा । उसे हुआ :

'बेचारे लड़के ने मेरे कहे अनुसार ही अनाज तौला होगा ।'
'अब क्या होगा ?'
परन्तु **मोटा** स्वस्थ थे ।
उनके पेट में पाप न था ।
फिर **मोटा** क्यों डरें ?
अन्य एक आदमी अनाज तौलने बैठा ।
वजन के अनुसार ही अनाज तौला था ।
एक मुट्ठीभर भी अनाज अधिक न था ।
किसान शर्मिंदा हुआ ।
उसे मन में पछतावा हुआ :
'अरे, ऐसे सच्चे लड़के पर गलत ढंग से शंका की ।'
वह किसान गया ।
फिर सेठ ने **मोटा** को नजदीक बुलाया ।
सेठ **मोटा** को धमका कर कहने लगे :
'तुम तो मेरा दिवाला निकालो ऐसे हो ।'
'व्यवहार करना सीखो ।'
'इस दुनिया में सत्यवादी हरिश्चन्द्र का काम नहीं है ।'
'इसलिए अब जरा होशियार बनो ।'
'मैंने जैसे बताया है वैसे ही तौला करो ।'
मोटा को ऐसा झूठ कैसे अच्छा लगता ?
मोटा ने विनयपूर्वक कहा :
'सेठजी, माफ करना ।'

'मुझ से झूठा व्यापार नहीं होगा ।'

'मेरा मन ना कहता है ।'

किशोर अवस्था के **मोटा** को पैसों की आवश्यकता थी । पिताजी को सहायक होने की भी इच्छा थी । तब भी **मोटा** ने नौकरी छोड़ दी ।

• • •

(१३) परायों को अपना बनाया

कालोल गाँव में अंग्रेजी की कक्षा चार तक की ही पाठशाला थी ।

अब **मोटा** को यदि आगे पढ़ना हो तो गाँव से बाहर जाना पड़ेगा । पिताजी बाहर भेज सके ऐसी स्थिति न थी ।

तब तक कालोल शाला के प्रधान शिक्षक **मोटा** के सहायक बने ।

उनका नाम घनश्यामराय नटवरराय मेहता था । सभी उनको घनुभाई कहकर बुलाते थे ।

घनुभाई होशियार विद्यार्थिओं पर स्नेह रखते थे । **मोटा** होशियार और विनयशील थे ।

'विद्या विनय से शोभा देती है ।'

मोटा सभी का दिल विनय से जीत लेते थे ।

घनुभाई को **मोटा** की पढ़ाई की चिंता होने लगी ।

इतना सुयोग्य विद्यार्थी पढ़ने के बदले नौकरी की मायाजाल में अटक पड़े, यह उन्हें कैसे अच्छा लगता ?'

घनुभाई ने एक दिन **मोटा** को बुलाकर पूछा :

'तुम्हें आगे पढ़ने के लिए पेटलाद जाना है ?'

मोटा ने कहा :

'साहब, पढ़ने के लिए मैं कहीं भी जाने को तैयार हूँ ।'

'परन्तु जाऊँ कैसे ? खर्चे की परेशानी है ।'

घनुभाई ने उसकी व्यवस्था कर दी ।

उनकी मौसीजी पेटलाद रहती थीं । उनका नाम था प्रभाबा ।

प्रभा मौसी कई बार कालोल आयीं थीं, इसलिए वे **मोटा** को पहचानती थीं । घनुभाई ने मौसी से बात की । प्रभा मौसी **मोटा** को अपने घर रखने के लिए तैयार हो गयीं ।

प्रभा मौसी गरीबों के प्रति सहानुभूति रखती थीं । आवश्यकता पड़ने पर उन्हें मदद करतीं । **मोटा** पढ़ने के लिए उनके घर रहने लगे । इससे प्रभा मौसी को बहुत अच्छा लगा ।

विद्यार्थी **मोटा** सोचने लगे :

'मैं पढ़ाई के लिए गाँव और माता-पिता को छोड़कर यहाँ आया हूँ ।'

'मैं दूसरों के यहाँ रहता हूँ । मुझे किसी पर भी बोझ नहीं बनना चाहिए । इस प्रकार रहूँगा जिससे घर के लोग खुश रहें ।'

मोटा घर के छोटे-मोटे कामों में उमंग से मदद करने लगे ।

वे नौकर के साथ काम करने लगते । रसोइए को भी मदद करते ।

घर के छोटे बच्चों को हँसाते-खेलाते । अच्छी-अच्छी कहानियाँ सुनाते । साथ ही पढ़ाते भी सही ।

जैसे दूध में मिसरी मिल जाती है वैसे **मोटा** कुछ ही दिनों में सभी के साथ हिलमिल गए ।

मोटा का स्वभाव मिलनसार और प्रेमपूर्ण था । इसलिए **मोटा** घर के सदस्य-जैसे हो गए, स्वजन बन गए ।

प्रभा मौसी **मोटा** पर अपने लड़के-जैसा ही प्यार करतीं । प्रभा मौसी धार्मिक थी, भजन-कीर्तन करती, अध्यात्म में विशेष रुचि रखती थीं ।

समय जाने पर तो प्रभा मौसी **मोटा** की 'आध्यात्मिक माँ' बन गयीं ।

पेटलाद हाईस्कूल के आचार्य ईश्वरभाई पटेल थे । वे विद्यार्थिओं के हितों का ठीक से ध्यान रखते थे । गरीब, निराधार, मेहनती विद्यार्थिओं को मदद करते । पढ़ाई में भी मदद करते ।

ऐसे स्नेही आचार्य मिलने पर **मोटा** की पढ़ाई अच्छी चलने लगी ।

• • •

(१४) संत ने सहायता की

जानकीदासजी नामक एक संत थे ।

वे यदाकदा पेटलाद आते रहते थे ।

श्री रंगवाला सेठ धार्मिक थे, साधु-संतों को चाहनेवाला थे । कोई न कोई साधु-संत उनके यहाँ आते ही रहते थे ।

जानकीदासजी भी उनके यहाँ ठहरते थे ।

मोटा जानकीदासजी महाराज के दर्शन के लिए जाते ।

सामान्यरूप से लोग साधु-संतों के दर्शन के लिए जाते, उनका उपदेश सुनते और एक तरफ बैठे रहते ।

मोटा को ऐसा अच्छा न लगता था ।

मोटा तो महाराजश्री के कमरे को झाड़-पोंछकर साफ करते । उनके कपड़े सूख गए हों तो तहकर उन्हें अपनी जगह ठीक से रख देते । कमरे में वस्तुएँ इधर-उधर पड़ीं हों, तो सभी वस्तुओं को व्यवस्थित कर देते ।

इस प्रकार, **मोटा** कुछ न कुछ काम करते ही रहते ।

जानकीदासजी यह सब देखते रहते ।

एक दिन जानकीदासजी ने **मोटा** को अपने पास बुलाकर पूछा :

'लड़के, तुम कहाँ रहते हो ? क्या पढ़ते हो ?'

मोटा ने सन्तजी से अपनी सभी बातें बताईं ।

जानकीदासजी ने सभी बातें ध्यान से सुनी ।

फिर सन्त **मोटा** के सिर पर हाथ फेरते हुए, पीठ थपथपाकर कहने लगे :

'बच्चे, शांत चित्त से पढ़ाई करना ।'

'मेरे लायक कुछ भी काम हो तो जरा भी संकोच किए बिना कहना ।'

ऐसे पढ़ाई करते-करते **मोटा** मैट्रिक में आ गए ।

उस समय जानकीदासजी ने **मोटा** को पास में बुलाकर प्रेम से कहा :

'बेटे, तुम मैट्रिक में हो । सारी पढ़ाई दो महीने में जल्दी से पूरी कर डालना ।'

मोटा ने सन्तजी को हाथ जोड़कर कहा :

'महाराज, यह कैसे संभव होगा ?'

'मैं गरीब हूँ । किसी शिक्षक का ट्यूशन भी कैसे रख सकता हूँ ?'

जानकीदासजी ने प्रेम से कहा :

'बच्चे, तुम जरा भी घबराओ नहीं । मैं इसकी व्यवस्था कर दूँगा ।'

फिर सन्तजी ने पाठशाला के शिक्षकों को बुलवाकर कहा :

'इस लड़के को दो महीने में मैट्रिक की सारी पढ़ाई पूरी करवा डालो । कोई भी विषय कच्चा न रह जाए ।'

शिक्षकों ने खास ध्यान देकर उसी अनुसार किया ।

प्रिलिमिनरी परीक्षा में थोड़ा समय बाकी था ।

मोटा अपने बड़े भाई को मिलने अहमदाबाद गए । वहाँ बहुत बीमार पड़ गए । बीमारी लम्बी चली । अंत में ठीक हुए । परन्तु शरीर बहुत ही कमजोर हो गया था ।

डाक्टर ने यह देखकर सलाह दी :

'इस वर्ष मैट्रिक की परीक्षा न दें । पूरा आराम करें । नहीं तो दोबारा बीमारी आ सकती है ।'

मोटा पेटलाद आए । उन्होंने आचार्य से सारी स्थिति बतलाई ।

आचार्यश्री ने **मोटा** को हिंमत दी और परीक्षा देने की सलाह दी ।

उन्होंनें कहा :

'तुमने बहुत जल्दी सारी पढ़ाई पूरी कर ली है । तुम अवश्य अच्छे नंबरों से पास हो जाओगे ।'

इसी दौरान जानकीदासजी पेटलाद आए ।

मोटा ने रोती हुई आवाज में सन्तजी को अपनी स्थिति बताई ।

जानकीदासजी मुस्कराकर स्नेह से बोले :

'अरे, तुम अवश्य पास हो जाओगे ।'

'प्रभु का नाम लेकर परीक्षा दे दो ।'

मोटा ने हिंमतपूर्वक परीक्षा दे दी ।

मोटा अच्छे नंबरों से पास हो गए ।

• • •

(१५) दायित्वपूर्ण कालिज-जीवन

मोटा मैट्रिक में बहुत अच्छे अंकों से पास हुए ।

गणित, संस्कृत और गुजराती में सत्तर प्रतिशत से अधिक अंक आए थे ।

पेटलाद के हाईस्कूल में प्रथम आए थे ।

इस कारण उनको इनाम भी मिला था ।

ऐसे आशास्पद विद्यार्थी थे **मोटा** ।

भगवान की कृपा से **मोटा** को कालिज में जाने के लिए मदद भी मिल गयी ।

मोटा वडोदरा कालिज में दाखिल हुए ।

मोटा ने एक आदर्श अपने मन में रखा था ।

'जिनकी आर्थिक राशि की मदद से कालिज में पढ़ने का अवसर मिला है, उसका कम से कम उपयोग हो वही अच्छा ।'

'किसी की मदद का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए ।'

'असुविधा भले ही सहनी पड़े ।'

'पर दूसरों के पैसों से गलत सुविधा नहीं भोगनी चाहिए ।'

'बहुत कंजूसी से रहना है ।'
'भगवान बरकत देंगे ।'
वडोदरा कालिज में पढ़ाई का प्रबंध तो हो गया ।
परन्तु रहे कहाँ ?
यह एक बड़ा उलझनवाला प्रश्न था ।
मदद करनेवाले हॉस्टल में रहने की सुविधा कर देते ।
परन्तु **मोटा** को ऐसी सुविधा लेनी न थी ।
एक भाई वडोदरा कालिज में फैलो थे ।
वे कालोल के नागर थे ।
वे **मोटा** को अच्छी तरह पहचानते थे ।
उनके मन में **मोटा** के लिए अच्छा स्नेह था ।
मोटा ने उन से विनती की **:**
'भाई, मुझ पर दया करो ।'
'मेरी गरीब स्थिति आप जानते ही हैं ।'
'हॉस्टल का खर्च मुझ से पूरा न होगा ।'
'मुझे अपने रूम में रहने दें ।'
'मैं कमरे को साफ रखूँगा ।'
'आपका सारा काम करूँगा ।'
'उन्होंने खुश होकर 'हाँ' कह दिया ।'
उनका कमरा हॉस्टल में ही था ।
वहाँ से कालिज बहुत नजदीक पड़ता था ।

● ● ●

(१६) डेढ़ आने में भोजन

मोटा वडोदरा कालिज में दाखिल हुए । वहाँ उनके रहने की व्यवस्था हो गई थी ।

पर अब रहा भोजन का प्रश्न ।

हॉस्टल की रसोई में भोजन महँगा था ।

एक महीने का भोजन खर्च तेईस-चौबीस रुपए जितना होता था, उन्हें सहायता करनेवाले सज्जन इतनी रकम अवश्य दे देते ।

परन्तु **मोटा** ने तो मन में निश्चय कर लिया था :

'प्रभुकृपा हो तो कम से कम खर्च में निर्वाह हो सके वही अच्छा ।'

'मानो कि मुझे पैसों की मदद करनेवाला कोई न होता तो ?'

'इसलिए ऐसी समझ मन में रखते हुए व्यवस्था करूँ उसी में भलाई है ।'

प्रभुकृपा से **मोटा** को उपाय सूझा ।

वडोदरा शहर के मध्य में मांडवी विभाग स्थित है । उसकी एक ओर चांपानेर दरवाजा है । उसी ओर जाते हुए वैष्णवों की एक हवेली है ।

बचपन में **मोटा** उस हवेली में गए थे ।

मोटा को अचानक वह याद आई ।

मोटा ने मंदिर को ढूँढ़ लिया ।

मोटा वहाँ के मुखिया से मिले । पैरों में पड़कर उन्होंने बिनती की :

'महाराज, मैं वडोदरा कालिज में पढ़ता हूँ ।'

'रोज मुझे भगवान का प्रसाद लेना है ।'

'कृपा करके रोज एक पत्तल प्रसाद दें तो आपका बड़ा उपकार होगा ।'

मुखियाजी ने खुशी से हाँ कर दी ।

एक पत्तल के प्रसाद की कीमत कितनी ?

मात्र डेढ़ आना ।

खाना संपूर्ण शुद्ध । इस पर शुद्ध घीवाला ।

मोटा रोज सुबह हॉस्टल से जल्दी निकलते ।

ढाई मील जाने के और ढाई मील आने के ।

फुटपाथ पर चलते-चलते पढ़ते जाते ।

मंदिर जाकर **मोटा** नहा लेते ।

एक पत्तल का भोजन लेकर लौटते ।

यह था रोज का क्रम ।

परन्तु छः-सात महीने बाद इस बात की जानकारी प्रभा मौसी को हुई ।

उन्होंने **मोटा** के भोजन की व्यवस्था कर डाली ।

● ● ●

(१७) सिनेमा देखना बंद किया

कालिज की हॉस्टल में कुछ विद्यार्थी 'चाय क्लब' चलाते थे ।

मोटा उन विद्यार्थीओं को चाय बनाकर देते ।

कुछ विद्यार्थी **मोटा** को छोटा-मोटा काम सौंपते रहते थे ।

मोटा उस काम को प्रेम से करते ।

मोटा दूसरों का काम करते हुए खुश होते ।

ऐसा करने से हम सरलता से सबके दिल में स्थान प्राप्त कर लेते हैं ।

उनके साथ स्नेह सम्बन्ध बंध जाते हैं ।

इसलिए **मोटा** पढ़ाई के साथ बहुत सारे लोगों का कुछ न कुछ काम करते रहते ।

मोटा सभी का काम आनंद से करते ।

इसलिए सभी विद्यार्थी **मोटा** के साथ मधुर संबंध रखते । आवश्यकता पड़ने पर खुश होकर मदद भी करते ।

वे विद्यार्थी कभी-कभी नाटक या सिनेमा देखने जाते ।

तो वे **मोटा** को कैसे भूलते ? वे उनकी भी टिकट ले लेते ।

कहीं घूमने जाते तो वहाँ भी वे **मोटा** को अपने साथ लिए बिना नहीं जाते ।

मोटा उनके साथ जाते भी थे ।

परन्तु उनके उपयोग में आ सकें, ऐसी सावधानी भी रखते ।

बिना काम की चर्चा या वादविवाद में कभी न पड़ते ।

किसी को मनदुःख न हो, उसका खास ध्यान रखते ।

एक दिन **मोटा** को अकेले फिल्म देखने का मन हुआ ।

परन्तु अकेले जाना हो तो टिकट स्वयं निकालनी पड़े ।

मोटा की ऐसी सामर्थ्य न थी । इतने पैसे लाए कहाँ से ?

मोटा ने अपने मन में मंथन किया ।

अंत में **मोटा** ने संकल्प किया :

'मित्र फिल्म देखने ले जाएँ तब भी नहीं जाऊँगा ।'

'क्योंकि फिल्म देखने की आदत हो जाए तो किसी दिन अकेले जाने का मन भी हो सकता है ।'

'इसलिए सबसे अच्छा उपाय है, सिनेमा देखना बन्द करना ।'

'जो मेरे बस की बात नहीं है, ऐसे शौक मैं न करूँ ।'

• • •

(१८) देश की आज़ादी के लिए कूद पड़े

कालिज की पढ़ाई में **मोटा** अच्छी तरह व्यस्त हो गए थे ।

मोटा बी. ए. के अंतिम वर्ष में आ गए ।

मोटा ने मन में सोचा :

'चलो, यह वर्ष प्रभुकृपा से सरलता से निकल जाए तो अच्छा ।'

'बी. ए. तो हो जाऊँगा ।'

'अच्छी नौकरी मिल जाएगी ।'

'घर में मददगार हो जाऊँगा ।'

'माँ की तकलीफें दूर होंगी ।'

'सुख के दिन आएँगे ।'

वहीं एक बड़ी घटना घटी ।

महात्मा गांधीजी देश की आज़ादी के लिए सत्याग्रह आंदोलन चला रहे थे ।

गांधीजी ने युवकों को सरकारी कालिजों का बहिष्कार करने का आह्वान किया ।

मोटा ने भी देश की स्थिति देखकर सोचा :

'अब कालिज में पढ़ना निरर्थक है ।'

'देश का काम देश के युवक न करें तो दूसरा कौन करेगा ?'

अंग्रेज सरकार का दमन बढ़ता जा रहा था ।

देश के वातावरण में आक्रोश अधिक था ।

परन्तु **मोटा** का कालिज छोड़ देना इतना आसान न था ।

जीवन में जो कुछ बनने का स्वप्न देखा था और जो अरमान रखे थे, वे सभी टूटकर चकनाचूर हो जानेवाले थे ।

कुटुम्ब के सभी सदस्य **मोटा** पर बड़ी बड़ी आशाएँ रखते थे ।

फिर **मोटा** को जो सज्जन सहायता करते थे, वे चाहते थे कि **मोटा** कालिज में ठीक से पढ़कर बाहर आएँ ।

मोटा इन सभी की नाराजगी नहीं लेना चाहते थे । इससे उन्हें दुःख भी बहुत होता था ।

मदद करनेवाले सज्जन उन्हें समझाने लगे :

'भाई, तुम आवेश में आकर यह सब कर रहे हो ।'

'तुम बरबाद हो जाओगे और तुम्हारा कुटुम्ब भी बरबाद होगा । वे बेचारे तुम पर आधार रखते हैं । इस विषय में तुम शांति से सोचो ।'

'सोचो तुम आगे क्यों पढ़ना चाहते थे, इसका भी जरा विचार करो । तुम्हारे सारे सपने नष्ट हो जाएँगे ।'

'यह आवेश दो-तीन साल में शान्त हो जाएगा । तब तक तुम पढ़ लो । पढ़ने के बाद तुम्हें जैसा ठीक लगे वैसा करना ।'

मोटा के सामने बड़ा धर्मसंकट आ पड़ा ।

मोटा मन ही मन में सोचते :

'अब जीवन का प्रवाह मुझे किसी दूसरी दिशा में ले जा रहा है ।'

'देश की सेवा करना भी हमारा धर्म है । इसमें हमारे जैसे कितने ही युवकों ने बलिदान दिया होगा ।'

'देश की स्वतंत्रता दिलाने का काम हम जैसे युवकों को ही करना है । दूसरा कौन करेगा ?'

मोटा की सोच कालिज-त्याग करने की ओर अधिक से अधिक बढ़ती जा रही थी । **मोटा** ने मन को बार-बार चेतावनी दी :

'भाई, इसमें कूद पड़ोगे फिर क्या ? बाद में दिन बहुत कष्टपूर्ण होंगे ।'

'शायद खाना भी न मिले । कोई मदद भी नहीं करेगा और मदद की आशा रखना भी गलत है ।'

'अब तो यह बात निश्चित है कि स्वयं के बल पर जीना है ।'

'इसलिए हे मनवा ! बार-बार इस विषय पर कृपा करके सोच ले ।'

वातावरण में बहुत उत्तेजना थी । कालिज के युवा विद्यार्थियों में उत्तेजना थी । पढ़ाई करने की बात किसी को न सूझती थी ।

इस प्रकार आज़ादी के प्रबल तूफान में अनेक विद्यार्थियों ने कालिजों का त्याग किया ।

उनमें से बहुत सारे विद्यार्थी पढ़ने में बहुत तेजस्वी भी थे । उनका भविष्य उज्ज्वल था । परन्तु देश के लिए सब कुछ न्यौछावर करने के लिए तैयार थे ।

मोटा ने भी वडोदरा कालिज का बहिष्कार किया ।

उनके साथ वडोदरा कालिज का त्याग करनेवाले दूसरे विद्यार्थी थे श्री पांडुरंग वळामे ।

वे भविष्य में श्रीरंग अवधूत महाराज के नाम से प्रसिद्ध हुए ।

सर्वप्रथम वडोदरा कालिज को छोड़कर असहकार आंदोलन में कूदनेवाले ये दो ही विद्यार्थी थे ।

श्रीमोटा और श्रीरंग अवधूत महाराज ।

● ● ●

(१९) नामस्मरण का चमत्कार

आगे चलकर **मोटा** हरिजन सेवा का कार्य करने में जुट गये ।

मोटा मानते थे :

'हमने वर्षों से बेचारे हरिजनों की अवगणना की है ।'

'उन्हें दुत्कारा है ।'

'पशु-पक्षी से भी हीन समझा है ।'

'उन्हें छूने में भी पाप समझते आए हैं ।'

'इसलिए उच्च वर्ण द्वारा किए गए अनिष्टों का हमें प्रायश्चित् करना चाहिए ।'

'अतएव हरिजनों की प्रेम से सेवा करनी चाहिए ।'

मोटा नडियाद में हरिजनों की सेवा करते थे, उसी दौरान उन्हें मिरगी आने लगी ।

मोटा साल में एक बार अपने कार्य से छुट्टी लेकर एकांत में, प्राकृतिक वातावरण में आराम करने जाते । नर्मदा तट पर आराम करने गए ।

मोखडी घाट के पार रणछोड़जी का मंदिर है । **मोटा** कुछ समय वहाँ रहे । (अभी यह मंदिर नर्मदा डेम में डूब चुका है ।)

मंदिर में रहनेवाले साधु महात्माओं की **मोटा** सेवा-सुश्रुषा करते ।

एक बार **मोटा** को वहाँ मिरगी आई ।

यह देख महात्मा ने उन्हें कहा :

'**बेटा, भगवान के नाम 'हरिः ॐ'** का सतत स्मरण करते रहो ।'

'तुम्हें पीड़ा देनेवाला यह दर्द मिट जाएगा ।'

मोटा को उन दिनों ऐसी बातों में श्रद्धा न थी । इसलिए उन्होंने उस बात को महत्त्व न दिया ।

एक बार **मोटा** प्रभा मौसी को मिलने वडोदरा गए ।

वहाँ एक बार अचानक **मोटा** को मिरगी आयी ।

मोटा मकान की तीसरी मंजिल की सीढ़ियों से गिर पड़े । लुढ़कते लुढ़कते वे फर्श पर गिर पड़े ।

वहाँ उन्हें नर्मदा तट पर मिले महात्मा के दर्शन हुए ।

महात्मा ने **मोटा** से कहा :

'अरे, भगवान का स्मरण '**हरिः ॐ**' तो करके देख । उसमें तुम्हारा क्या जाता है ? उसमें तुम्हारे कौन-से पैसे जा रहे हैं ?'

'श्रद्धा रख । भगवान का नामस्मरण '**हरिः ॐ**' करके तो देख ।'

मोटा ने यह बात प्रभा मौसी को कही ।

यह सुनकर प्रभा मौसी बोल उठीं :

'यह तुम्हारे लिए सौभाग्य की बात है ।'

'समझदारी से मन में शंका-कुशंका करना छोड़ दे ।'

'भगवान का स्मरण लगातार करते रहो ।'

'उठते-बैठते, घूमते-फिरते, खाते-पीते सभी काम करते-करते भगवान के नाम का स्मरण किया करो ।'

'महात्मा ने कहा है तो तुम्हारा यह रोग अवश्य मिट जाएगा ।'

मोटा को प्रभा मौसी की बात सच्ची लगी ।

उन्हें मिरगी मिटाने की बड़ी जरूरत थी । इस रोग को मिटाने के लिए **मोटा** 'हरि:ॐ' का जाप करने लगे ।

फिर भी मन में डगमग रहीं ।

मोटा को गांधीजी में अटल श्रद्धा-विश्वास थे ।

ऊन्होनें गांधीजी को चिट्ठी लिखी :

'क्या भगवान का नामस्मरण करने से मेरा रोग मिट जाएगा ?

गांधीजी ने प्रत्युत्तर दिया :

'अवश्य । भगवान का नामस्मरण करने से तुम्हारे सारे कष्ट दूर होंगे ।'

अब **मोटा** निष्ठापूर्वक व्यवस्थित नामस्मरण करने लगे ।

धीरे-धीरे नामस्मरण का समय बढ़ाते गए ।

बढ़ाते-बढ़ाते नित्य चार घण्टे के अलावा भी नामस्मरण करने लगे ।

अंत में प्रभुकृपा से मिरगी का रोग मिट गया ।

नामस्मरण के विषय में **मोटा** कहते हैं :

'इस समय के दौरान भगवान का स्मरण करते-करते मुझे लगता था कि उत्साह, उमंग, निष्ठा, उद्यम आदि प्राप्त होते जा रहे थे ।'

'एक ओर रोग मिटा और दूसरी तरफ गुण बढ़ने का अनुभव हुआ । इससे दिल में दिल से दोगुना प्रोत्साहित होकर श्रीहरि का स्मरण बढ़ता गया ।'

'श्रीप्रभुकृपा से दिल में दिल से जीवन के ध्येय की चेतना जाग गई थी ।'

'जीवन में अब यही एक कर्म प्रभुप्रीति के लिए करना है, ऐसी चेतना मेरे दिल में उस समय समा गई थी ।'

• • •

(२०) सद्‌गुरुओं का समागम

सामान्यरूप से मनुष्य सद्‌गुरु की खोज में सारी जिन्दगी भटकते हैं पर उन्हें सद्‌गुरु नहीं मिलते हैं ।

प्रभुकृपा से **मोटा** को सद्‌गुरु ही खोजते हुए आए ।

मोटा नडियाद में हरिजन कार्य करते थे ।

साथ ही अपनी सूझ के अनुसार आध्यात्मिक साधना भी करते थे ।

'हरिः ॐ' का जाप लगातार चलता रहे, इसकी सावधानी रखते । आर्तभाव से जाप करते ।

निर्भयता प्राप्त करने के लिए **मोटा** रात में स्मशान जाकर अकेले सो जाते ।

मोटा दिन को अधिकतर मौन रखते । आवश्यकता से अधिक न बोलते । चर्चा या वादविवाद में न पड़ते ।

नामस्मरण, प्रार्थना, भजन आदि किया करते ।

अपनी इस साधना का किसी को भी पता न लगने देते ।

पूरे दिन हरिजनसेवा का काम भी उतने ही उत्साह से करते ।

उसी दौरान उन्हें **श्रीबालयोगी महाराज** का समागम हुआ ।

श्रीबालयोगीजी ने **मोटा** को वसंतपंचमी के शुभ दिन दीक्षा दी ।

दीक्षा देने के बाद श्रीबालयोगीजी ने कहा :

'लड़के, तुम्हारे गुरुमहाराज तो श्रीकेशवानंदजी धूनीवाले दादाजी हैं ।'

'उन्होंने मुझे यहाँ तुम्हें दीक्षित करने के लिए भेजा है ।'

'उनके पास जा । उनके आशीर्वाद ले । वे जो आदेश दें उसके अनुसार आचरण कर ।'

मध्यप्रदेश में गाडरवाडा के पास साँईखेड़ा नामक स्थान है । वहाँ धूनीवाले दादा रहते हैं ।

मोटा धूनीवाले दादा के पास गए । थोड़े दिन वहाँ रहे ।

अंतिम दिन गुरुमहाराज ने **मोटा** को आदेश देते हुए कहा **:**

'तुम अपने घर जाओ । तुम मेरी प्रार्थना करते रहना ।'

'जहाँ रहो वहीं काम करो । प्रभुप्रीति के लिए ही – प्रभु के लिए ही तुम्हें काम करना है । दूसरे किसी के लिए नहीं ।'

'भगवान के प्रति तुम्हारा भाव जागे, यह बहुत आवश्यक है ।'

फिर तो साकुरी के श्रीउपासनीबाबा, शिरड़ी के श्रीसाँईबाबा भी **मोटा** को साधनामार्ग प्रदान करने हेतु प्रत्यक्ष मिले थे ।

• • •

(२१) अखण्ड नामस्मरण

नामजप की उच्च स्थिति है – अखण्ड नामस्मरण ।

मोटा उस स्थिति में कैसे पहुँचे इस प्रसंग को देखें ।

मोटा प्रार्थना, स्तवन, भजन, ध्यान, धारणा, नामस्मरण आदि करते थे ।

अधिक से अधिक पुरुषार्थ द्वारा **मोटा** दिन के १६ घण्टे नाम का जाप करने लगे ।

मोटा ने उत्साह से प्रयत्न जारी रखा । परन्तु अखण्ड नामस्मरण तक वे नहीं जा सके ।

उसी दौरान खेड़ा जिले के बोदाल गाँव में हरिजन बालकों के लिए आश्रम स्थापित किया गया था । **मोटा** खेत में वहाँ रात के समय सो रहे थे ।

रात को एक ज़हरीले साँप ने **मोटा** की जाँघ में काट लिया ।

मोटा के दिमाग में जोरदार झटका लगा ।

उस समय **मोटा** को गांधीजी का एक लेख याद आ गया **:**

'जिसे साँप ने काटा हो, उसे बेहोश नहीं होने देना चाहिए । उसे जागृत रखना चाहिए । इसके लिए उसे मारना पड़े तो भी उसे हिंसा नहीं मानना चाहिए ।'

इसलिए **मोटा** ने सोचा **:**

'मुझे साँप ने काटा है । इसलिए किसी भी हिसाब से मुझे जागृत रहना चाहिए ।'

मोटा जोर जोर से '**हरि:ॐ**' का जाप जपने लगे । कोई पूछे तो उसका उत्तर **मोटा** न देते । बस जाप करते रहते ।

ज़हर उतारने के लिए **मोटा** को दो-तीन गाँवों में ले जाया गया । परन्तु कुछ भी परिणाम न आया ।

इसलिए आणंद में डॉ. कुक के दवाखाने में **मोटा** को ले गए ।

डॉ. कुक ने जठर से ज़हर निकाल लिया । उसकी जाँच करते डॉ. कुक चकित हो बोल उठे **:**

'यह लड़का मात्र ईश्वर के स्मरण से बच गया है ।'

'ज़हर बहुत ही कातिल है । प्रभुकृपा से ही यह लड़का बचा है ।'

मोटा ने ७६ घण्टे तक लगातार नामस्मरण किया था । इस प्रकार सर्पदंश **मोटा** के लिए बड़ा उपकारक हुआ ।

मोटा का नामस्मरण अखण्ड रूप से चलने लगा ।

• • •

(२२) हरि ने लाज रखी

मोटा की एक मौसी थी । उनकी स्थिति अच्छी थी ।

मोटा के बड़े भाई गंभीर बीमारी की चपेट में आ गये । उस समय मौसी के पास से दो-तीन बार पैसे लिए थे ।

परन्तु **मोटा** की इतनी आय न थी, इसलिए उस रकम को वे नहीं भर पाये ।

मोटा रोज घर से हरिजन शाला में पढ़ाने जाते ।

उन दिनों रास्ते पर चलते हुए **मोटा** ऊँचे स्वर में कोई न कोई भजन गाते ।

एक दिन **मोटा** शाला में जाते हुए गा रहे थे **:**

'हरिने भजतां हजु कोईनी लाज,
जती नथी जाणी रे....'

(हरि को भजते हुए अभी तक किसी की लाज जाते हुए नहीं जाना है ।)

रास्ते में मौसी का घर पड़ता था ।

मोटा की आवाज सुनकर मौसी बाहर आयी । मौसी जोर से चिल्लाकर बोली **:** 'अरे चुनिया, अब मेरे पैसे वापिस कब करेगा ? कितने सारे दिन हो गए । तुम्हें कुछ चिन्ता है ?'

मोटा ने मौसी को देखते हुए कहा :

'मौसी, अब जैसे बनेगा वैसे ही तुम्हारे पैसे लौटा दूँगा । चिन्ता न करना ।'

इसी प्रकार कभी-कभार मौसी **मोटा** को टोका करती और **मोटा** शान्ति से उत्तर दे देते ।

मौसी वायदा सुन सुनकर उकता गयी । एक दिन उन्होंने निश्चय किया : 'यह चुनिया रोज कोई न कोई बहाना बनाता रहता है । आज उसकी आ बनी ।'

'रास्ते पर खड़े होकर उसे ठीक से झाड़ूँगी । वह इसी लायक है ।'

उस दिन **मोटा** प्रतिदिन की तरह उस रास्ते से निकले । वही भजन गा रहे थे :

'हरिने भजतां हजु कोईनी लाज...'

आवाज सुनकर मौसी बाहर रास्ते पर दौड़ी आयीं ।

मोटा का रास्ता रोककर चिल्ला उठीं :

'ओ साधु, अब तुम्हारा ढोंग नहीं चलेगा ! इस प्रकार के गलत वायदे देते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती ?'

'आज यदि तुम मुझे पैसे वापिस नहीं करोगे तो तुम्हें यहाँ से जाने नहीं दूँगी ।'

'आज तुम्हारी खूब फजीहत करूँगी ।'

इस प्रकार मौसी अनापशनाप बोलने लगी ।

मोटा धीरज से सुनते रहे । उन्होंने मौसी को प्रेमपूर्वक कहा,

'मौसी, मौसी, शान्त हो जाइए। आप कहाँ परायी हैं। आप हमारे घर की स्थिति जानती ही हो। मैं बहुत लाचार हूँ।'

'मुझे भी बार बार वायदा करते हुए बहुत शर्म आती है। पर क्या करूँ, मौसी ?'

परन्तु मौसी का पारा चढ़ता ही गया। मौसी ने खूब आड़े हाथों लिया।

मोटा ने सोचा :

'मौसी क्रोध से भरी हुई हैं। इस समय मौन रहना ही अच्छा है।'

मोटा चुपचाप सिर झुकाकर सुनते रहे।

सुबह का समय। लोगों का आनाजाना प्रारंभ हो गया था।

मौसी की चिल्लाने की आवाज सुनकर लोग तमाशा देखने इकट्ठे होने लगे।

सभी को मुफ्त में मौसी-भानजे का झगड़ा देखने का आनंद आया।

अन्त में **मोटा** ने मौसी के पैरों पड़कर कहा :

'मौसी, मैं तुम्हारे पैरों पड़ता हूँ। कुछ समय दो।'

'दो-चार दिन में तुम्हें किसी भी हिसाब से पैसे चुका दूँगा।'

'मुझे शाला में पहुँचने की देर हो रही है। विद्यार्थी मेरी राह देख रहे होंगे।'

'दया करके मुझे जाने दो।'

मौसी रुखाई से कहने लगी :

'ठीक है जा । दो-चार दिन में नहीं दिए तो तुम्हारी फजीहत किए बिना नहीं रहूँगी । समझे न ?'

रास्ता खुलते ही **मोटा** शाला में गाते हुए जाने लगे :

'हरिने भजता हजु कोईनी लाज....'

मोटा उस दिन पूरे समय बहुत ही बैचेन रहे ।

काम में दिल न लगता था ।

हरि की वे आर्तभाव से प्रार्थना करते रहते :

'हे प्रभु ! तुम दयालु हो । मेरी लाज रखना ।'

'हे परमात्मा ! तुमने अनेक भक्तों की लाज रखी है । मुझे इस समय सहायता करना ।'

'हे मेरे नाथ ! मैं बहुत लाचार हूँ ।'

इस प्रकार **मोटा** ने दो-तीन दिन तल्लीन हो प्रार्थना में गुजारे । तब तक **मोटा** को एक मनीऑर्डर मिला ।

मौसी जितनी रकम माँगती थी, उतनी ही रकम डाक में आयी थी ।

मनीऑर्डर मिलते ही **मोटा** गद्‌गद हो गए ।

भगवान ने अंत में भक्त की लाज तो रख ही ली ।

मोटा दौड़ते-दौड़ते गए और मौसी का सारा कर्ज चुका दिया ।

• • •

(२३) दिल जीत लेनेवाला नौकर

मोटा किसी को पता न लगे इस तरह अपनी साधना करते थे ।

वैसे तो वे हरिजनसेवा का काम ही करते थे ।

मोटा उस समय हर साल एक महीने की छुट्टी लेते ।

मोटा किसी एकान्त स्थान पर जाते । वहाँ गुरुमहाराज के आदेश अनुसार साधना करते थे ।

जबलपुर के पास नर्मदा नदी पर धुआँधार नाम की जगह है ।

मोटा एक बार वहाँ साधना करने के लिए निकले ।

इतने में रेलगाड़ी में उनकी जेब कट गयी । साथ में जो रकम थी सारी चली गयी ।

अब क्या होगा ?

मोटा को रास्ता मिल गया ।

वे जबलपुर में एक गुजराती व्यापारी की दुकान पर गए ।

जेब कटने की बात कर **मोटा** ने उनसे कहा **:**

'सेठजी, मुझे इतनी रकम प्राप्त करने के लिए थोड़े दिन नौकरी करनी होगी । कोई कामकाज हो तो देने की कृपा करें ।'

व्यापारी ने मूछों पर हाथ फिराते हुए कहा **:**

'मेरे पास अभी कोई काम नहीं है ।'

'पर हाँ, तुम घर का काम करने के लिए तैयार हो ?'

'बर्तन माँझने पड़ेंगे ।'

'कपड़े धोने होंगे ।'

'ऐसे सभी घर के काम कर पाओगे ?'

मोटा तुरन्त बोले :

'ऐसा काम करना मुझे पसंद है । मैं खुश होकर करूँगा ।'

सेठ ने खुश होकर घर में खबर दी :

'हमें नया नौकर मिल गया है । मैं उसे घर भिजवा रहा हूँ । उसे काम सौंपना । कैसा काम करता है, उसे देखना । ठीक लगेगा तो रखेंगे ।'

मोटा को सेठ ने घर भेजा ।

सेठानी ने ढेर सारे बर्तन माँजने को दिए ।

बचपन में मोटा ने ऐसा काम किया था । इसलिए बर्तनों को अच्छी तरह माँजकर किस तरह साफ करना है, यह उन्हें आता था ।

मोटा ने तुरन्त बर्तन माँज दिए ।

धोकर धूप में सुखाने रख दिए ।

चौकड़ी ठीक से साफ कर दी ।

बर्तन अच्छी तरह मँजे थे । धूप में चमक रहे थे ।

सेठानी ने दूर से बर्तन देखे । यह देखकर वह बहुत खुश हो गयी ।

सेठानी ने सोचा :

'वाह ! वाह ! अच्छा नौकर मिल गया ।'

फिर **मोटा** को गट्ठर भरकर कपड़े धोने को दिए ।

मोटा को कपड़े धोने भी अच्छे आते थे ।

मोटा ने कपड़ों को तीन विभागों में बाँट दिया ।

सबसे कम मैले, जरा अधिक मैले और सबसे ज्यादा मैले ।

साबुन के पानी में सभी को अलग-अलग भिगोया ।

फिर सबसे कम मैले कपड़े पहले धोए ।

उसके बाद जरा अधिक मैले कपड़े धोए ।

अंत में बहुत मैले कपड़े घिसकर और मसलकर ठीक से धोए ।

सारे कपड़े अच्छी तरह धोकर-निचोड़कर धूप में सुखाने डाले ।

बगुले की पंख जैसे साफ कपड़े देखकर सेठानी खुश हो गयी ।

सेठ दिन में भोजन करने आए । सेठानी ने नौकर की बहुत प्रसंशा करते हुए कहा :

'इस तरह हाथ का साफ नौकर जिन्दगी में पहली बार देखा । क्या उसका काम है !'

रात को खा-पीकर, बर्तन माँजकर, चौकड़ी धोकर **मोटा** निपट गए ।

तब तक बिस्तर लगाने का समय हो गया ।

प्रत्येक बिस्तर को इतने अच्छे ढंग से लगाया कि देखनेवाले

खुश हो गए ।

बिस्तर पर की चद्दर ठीक से खींचकर लगायी । कहीं भी थोड़ी सी भी सलवट न दिखी ।

रात को थोड़ा-सा समय मिलता ।

उस समय **मोटा** घर के बच्चों को इकट्ठा करते, रामायण, महाभारत की बातें सुनाते ।

बालक भी खुश-खुश हो जाते ।

रात को सभी सो जाते ।

तब **मोटा** बिस्तर में बैठे-बैठे नामस्मरण करते ।

हरि का स्मरण करते-करते **मोटा** सो जाते ।

पूरे दिन उमंग से काम किया हो, इसलिए एक ही नींद में सुबह हो जाती ।

फिर **मोटा** घर के कामों मे जुट जाते ।

थोड़े दिनों में **मोटा** को जितनी रकम चाहिए थी, उतनी मिल गई ।

मोटा सेठ से छुट्टी लेने गए ।

मोटा का इतना सुघड़ और साफ काम देखकर सेठ को लग रहा था **:**

'यह आदमी गरीब मजदूर नहीं है ।'

'पैसों की कमी के कारण ही यह काम करने को तैयार हुआ होगा ।'

सेठ ने कुतूहल होकर पूछा **:**

'भाई, तुम नौकर की तरह नहीं लगते हो ।'

'तुम जबसे आए तबसे तुम्हारा काम हम देखते आए हैं ।'

'नौकर आदमी को इतनी सारी सोच-समझ सामान्यरूप से नहीं होती ।'

'तुम मुझसे खुलकर बात करो । जिससे मुझे समझ आए ।'

मोटा ने नम्रभाव से सारी बात कही ।

यह सुनकर सेठ सोचने लगे :

'अरे ! ऐसे भगत आदमी से घर का काम करवाया ।'

'प्रभुभजन के थोड़े दिन गँवाए ।'

फिर **मोटा** सेठ-सेठानी से छुट्टी लेकर धुआँधार जाने निकल पड़े ।

सेठ-सेठानी **मोटा** को अहोभाव से देख रहे थे ।

• • •

(२४) चोर ने गहने लौटाए

सिंधिया स्टीम नेविगेशन कंपनी के मैनेजर परसदभाई कराची में रहते थे ।

मोटा उनके यहाँ कराची में थे ।

परसदभाई की दो बेटियाँ : कुरंगीबहन और चित्राबहन ।

ये दोनों बहनें बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी में परीक्षा देने जाने के लिए तैयार हुईं ।

इतनी दूर दोनों बेटियों को अकेली भेजने के लिए परसदभाई तैयार न थे ।

उन्होंने **मोटा** को अपनी बेटियों के साथ बनारस जाने को कहा । इसलिए **मोटा** उन दोनों बहनों की देखभाल करने बनारस गए ।

एक समय ये दोनों बहनें बाहर घूमने गईं और अपने गहने निकालकर **मोटा** को सँभालने दे गयीं ।

मोटा ने उन गहनों को कुरते की जेब में रख लिए ।

कुछ घण्टों बाद **मोटा** उन बहनों के साथ काशी विश्वनाथ के मंदिर में महादेवजी के दर्शन करने गए । मंदिर में बहुत भीड़ थी । उस भीड़ में रास्ता निकालते-निकालते वे अंदर दाखिल हुए । दर्शन करके घर वापिस आए । दूसरे दिन गंगा नदी में नौकाविहार करने जाने का प्रबंध किया ।

मोटा कपड़े बदलने लगे । पहने हुए कुरते की जेब से नए कुरते की जेब में रखने के लिए जेब को टटोलने लगे ।

उस समय **मोटा** को पता चला कि कुरते की जेब तो कट गयी है । गहनों की भी चोरी हो गई है ।

मोटा ने विचार किया **:**

'मेरे भरोसे जो रखा हो, उसकी जिम्मेदारी मेरी है । अब जो भगवान करे वह सही ।'

मोटा ने बहनों से बात की ।

बहनों ने उस बात को बहुत महत्त्व न दिया । **मोटा** को इस घटना को भूल जाने को कहा ।

परन्तु **मोटा** का मन कचोटता था । मन में बहुत अफसोस होने लगा ।

दो बहनें और **मोटा** नौकाविहार के लिए गंगाजी के किनारे गए ।

नौका में बहनों की एक सखी भजन गाने लगी ।

भजन सुनते-सुनते **मोटा** भावावेश में आ गए । बाह्य चेतना चली गई ।

इस स्थिति में **मोटा** को एक दृश्य दिखाई दिया ।

विश्वनाथ मंदिर में किसने और कब जेब काटी, वह सारा दृश्य ज्यों का त्यों दिखाई दिया ।

इसलिए **मोटा** भावावेश की स्थिति में ही बोले **:**

'अरे, यह गहने मेरे नहीं हैं ।'

'बहनों ने मुझे सँभालने के लिए दिए थे ।'

'मैं तो गरीब आदमी हूँ । मैं भरपाई कर सकूँ ऐसा नहीं हूँ । इन गहनों को तुम हजम नहीं कर पाओगे । तुम मुझे वापिस कर दो ।'

'मेरे रहने का अमुक ठिकाना है ।'

'सुबह परीक्षा का अमुक समय होने से आधा पौना घण्टा मैं हिन्दू युनिवर्सिटी के अमुक स्थान पर जाता हूँ ।'

यह सब ध्यान की अवस्था में हुआ ।

दूसरे दिन बहनों की परीक्षा थी । जिस भवन में परीक्षा ली जानी थी, वहाँ **मोटा** दूसरी मंजिल पर खड़े थे ।

कुरंगीबहन की एक सखी के साथ **मोटा** बाहर के बरामदे में खड़े बातें कर रहे थे ।

उस समय एक व्यक्ति दूर से हाँफता-हाँफता दौड़ते हुए आते दिखा ।

वह व्यक्ति **मोटा** को हाथ हिलाकर बुलाने लगा ।

'भाई साहब ! मेहरबानी करके नीचे आओ ।'

मोटा नीचे आए और उस व्यक्ति से मिले ।

उस व्यक्ति ने हाँफते-हाँफते **मोटा** से कहा :

'तुम्हारे इन गहनों को वापिस ले लो ।'

'मेरा पूरा शरीर इतना सारा जल रहा है कि मैं उसकी जलन सहन नहीं कर पा रहा हूँ ।'

'भाई साहब, मेहरबानी करके वह मिट जाए ऐसा करो ।'

प्रभु की कृपा का यह कैसा चमत्कार !

मोटा का हृदय भाव से गद्‌गद हो उठा ।

गहने वापिस मिल जाने से **मोटा** को बहुत राहत मिली ।

उस व्यक्ति ने **मोटा** के पैरों में पड़कर गिड़गिड़ाते हुए कहा :

'भाई साहब, मेरा यह भयंकर दाह मिटाओ ।'

मोटा ने उससे कहा :

'भाई, यह तो मेरे प्रभु का सारा चमत्कार है ।'

'तुम कैसे जान पाए कि ये गहने मेरे हैं और मैं यहाँ हूँ ?'

उस व्यक्ति ने कहा :

'कल शाम से मुझे अचानक पूरे शरीर में ऐसी भयानक जलन होने लगी कि वह मुझसे सहन नहीं होती थी ।'

'इसी दौरान तुम्हारा चहेरा बार-बार नजरों के सामने तैर जाता था ।'

'तुम कहाँ रहते हो उस जगह का मुझे पता चल गया था ।'

'फिर सुबह तुम कहाँ हो, यह भी मैं देख पा रहा था । रात में आने की मुझ में शक्ति न थी और अभी भी नहीं है ।'

'पर जैसे-तैसे आ सका हूँ । निकलने लगा तो लगा कि नहीं चल पाऊँगा । पर फिर इतनी अधिक तेजी आ गई कि दौड़ना ही शुरू कर दिया और एक ही साँस में यहाँ तक आ गया हूँ ।'

'इसलिए कृपा कर इस जलन को मिटाओ ।'

मोटा ने उसे सहज भाव से कहा :

'भाई, तुम अब एक व्रत लो ।'

'विश्वनाथ के मंदिर में आनेवाले दर्शनार्थियों की जेब नहीं काटोगे ।'

'यदि तुम इस वचन का संपूर्ण पालन करने को तैयार हो तो प्रभुकृपा से तुम्हारे शरीर की दाह अवश्य मिट जाएगी ।'

'कोई बेचारा मेरे जैसा गरीब व्यक्ति महादेवजी के दर्शन करने आए और उसकी जेब कट जाए तो उसके हाल कैसे होंगे ?'

'इसलिए कृपा कर मंदिर में किसी का जेब न काटने का दृढ़ निश्चय करो ।'

उस व्यक्तिने **मोटा** के पैरों में पड़कर माफी माँगते हुए गद्‌गद कंठ से कहा :

'भाई साहब ! भूख से मर जाऊँगा पर मंदिर में किसी की जेब न काटूँगा । इतना ही नहीं, जेब कतरने का काम ही छोड़ दूँगा ।'

कुछ देर में ही उस व्यक्ति का दाह मिट गया ।

वह भक्तिभाव से **मोटा** के पैरों में पड़कर चला गया ।

पराये गहने प्रभुकृपा से वापिस मिल गए ।

इसलिए **मोटा** श्रीहरि को मन ही मन में नमन करके आभार मानने लगे ।

• • •

(२५) हरिःॐ आश्रम

मोटा नामस्मरण पर बहुत भार देते थे ।

भगवान का नाम हमें उठते-बैठते, सोते-जागते, काम करते-करते लेते ही रहना चाहिए ।

ऐसा करने से हमारा मन अधिक से अधिक शुद्ध, प्रभुमय होता जाता है । चित्तशुद्धि बहुत महत्त्वपूर्ण है ।

मन ही हमारे जीवन को मार्ग दिखाता है ।

मनुष्य को बाँधनेवाला भी मन है ।

इसलिए मन को प्रभुपथ की ओर, सन्मार्ग की ओर मोड़ने के लिए नामस्मरण ही श्रेष्ठ उपाय है ।

इस युग में मनुष्य संसार में रहकर अपने जीवन को अच्छा बना सकता है।

इसके लिए वन में जाने की आवश्यकता नहीं है ।

हिमालय में जाने की आवश्यकता नहीं है ।

बहुत तपस्या करने की भी आवश्यकता नहीं है ।

भगवान के नाम का जाप ही आज के जमाने में आत्मविकास करने का श्रेष्ठ साधन है ।

मोटा नामस्मरण के विषय में कहते हैं **:**

'नामस्मरण के लिए विशेष शास्त्र जानने की भी आवश्यकता नहीं है ।'

'विशेष प्रकृति जानने की भी आवश्यकता नहीं है ।'

मुख्य बात तो यह है कि –

'जब से दिल में श्रीहरि का नाम लेने की प्रेरणा हो, तब से ही जैसा आता हो वैसा लेने की शुरूआत कर देनी चाहिए ।'

'भले किसी को रूढिगत लगे । तब भी वह हमारे लिए लाभदायक रहेगा ।'

नामस्मरण निरंतर करते रहना चाहिए ।

उसके लिए-घरसंसार में चाहिए वैसी सरलता सामान्यरूप से प्राप्त नहीं हो पाती ।

उसके लिए तो किसी एकान्त स्थान पर जाना पड़ता है ।

परन्तु सभी के लिए ऐसा करना संभव नहीं है ।

ऐसी व्यक्तिओं के लिए **मोटा** को श्रीगुरुमहाराज की तरफ से आदेश मिला ।

मोटा को मौनमंदिर शुरू करने की प्रेरणा मिली ।

गुजरात में **मोटा** के दो मुख्य हरि:ॐ आश्रम हैं :

एक नडियाद में – जूना बिलोदरा गाँव की श्मशानभूमि के पास, शेढी नदी के किनारे ।

दूसरा आश्रम है – सूरत में जहाँगीरपुरा, कुरुक्षेत्र श्मशानभूमि के पास, तापी नदी के किनारे ।

इन हरि:ॐ आश्रमों में मौनमंदिर हैं ।

मौन के इन विशेष कमरों में 'जाप का यज्ञ' (जपयज्ञ) करने की पूरी सुविधाएँ हैं ।

कभी हरि:ॐ आश्रमों को देखने अवश्य जायें ।

वहाँ की मौनसेवन व्यवस्था समझने जैसी है ।

• • •

(२६) श्रीमोटा का अनोखा कार्य

एक दिन **मोटा** नडियाद के हरि:ॐ आश्रम में वटवृक्ष के नीचे बैठे थे ।

उस समय श्रीगुरुमहाराज ने दर्शन देकर कहा :

'तुम समाज के लिए कुछ काम करो ।'

'यों बैठे रहने का क्या मतलब है ?'

मोटा ने श्रीगुरुमहाराज को प्रणाम करके पूछा :

'गुरुमहाराज, मैं क्या काम करूँ ?'

श्रीसद्गुरु ने उत्तर दिया :

'समाज से एक करोड़ रुपया इकट्ठा करो ।'

'फिर समाज को वापिस दे दो ।'

'पर काम मौलिक करो ।'

मोटा ने श्रीगुरुमहाराज से पूछा :

'मुझे कौन देगा ?'

गुरुमहाराज ने कहा :

'तुमसे यह काम होगा ।'

'तुम्हारे साथ मेरी सहायता है ।'

आदेश का पालन करना यह तो **मोटा** के स्वभाव में ही था ।

सन् १९६२ से **मोटा** ने काम करना शुरू किया ।

'समाज को आत्मनिर्भर करने का काम ।'

इस प्रकार चौदह वर्ष तक **मोटा** जनसमाज के बीच घूमते रहे ।

समाज का गुणात्मक और भावात्मक विकास हो ऐसी विविध मौलिक योजनाएँ **मोटा** ने बनाईं ।

इसके लिए श्रीगुरुमहाराज के आदेश अनुसार एक करोड़ रुपए भी इकट्ठे किए ।

अंत में संकल्प पूरा किया ।

मोटा की इस अनोखी दानगंगा के विषय में जरूर जानो ।

• • •

(२७) जीवन धन्य किया

श्रीमोटा बहुत महान संत थे ।

मुक्तात्मा थे ।

परन्तु वे समाज में प्रेमभाव से और स्वजनभाव से सबके साथ घूमते-फिरते, हँसते-मिलते रहते थे ।

रहन-सहन भी सीधा-सादा था ।

पहली बार श्रीमोटा को कोई देखे तो उनकी महानता का पता ही न चले ।

मोटा तो साक्षात्कार सम्पन्न सिद्ध संत थे ।

सन् १९३४ में **मोटा** को भगवान श्रीकृष्ण का साक्षात्कार हुआ ।

२९ मार्च, १९३९ में रामनवमी के शुभ दिन बनारस में निराकार ब्रह्म का साक्षात्कार हुआ ।

मोटा का जीवन 'जीवन-तीर्थ' बन गया ।

परन्तु **मोटा** का व्यवहार सरल ही रहा ।

श्रीमोटा के जीवन का यही बड़प्पन है ।

आगे चलकर **मोटा** का स्वास्थ्य धीरे-धीरे बिगड़ने लगा ।

मोटा नडियाद आश्रम में थे ।

स्वास्थ्य गिरता जा रहा था ।

१९ जुलाई, १९७६ का दिन था ।

मोटा ने आश्रम का छपा हुआ पैड़ माँगा ।

सोते-सोते लिखने लगे ।

'लिखा हुआ पत्र' उन्होंने नंदुभाई को २२ जुलाई १९७६ को दिया ।

उसमें लिखा था :

वील याने वसीयत

'..... अपनी इच्छानुसार मैं खुशी से अपनी जड़ देह को त्यागना चाहता हूँ ।'

'..... और इसके लिए योग्य समय लगने पर मैं ऐसा करूँगा ।'

'मेरे शरीर का अग्निसंस्कार शान्त जगह पर, मृत्युस्थल के एकदम नजदीक ही करना ।'

'और वह भी आप छः व्यक्तियों की उपस्थिति में ही करना ।'

'भीड़ इकट्ठी न करना ।'

'मेरी सभी अस्थियों को भी नदी में विसर्जित कर देना ।'

'मेरे नाम का ईंट-चूने का कोई स्मारक नहीं बनाना ।'

'मेरी मृत्यु के निमित्त जो भी राशि इकट्ठी हो, उसका उपयोग गाँवों की शाला के कमरों के निर्माण करने में करना ।'

और स्वेच्छानुसार **मोटा** ने वडोदरा के नजदीक मही नदी के किनारे फाजलपुर में एलेम्बिकवाले श्रीरमणभाई अमीन के मकान में अपने देह का त्याग कर दिया ।'

दिन था २३ जुलाई, १९७६, शुक्रवार, जल्दी प्रातः डेढ़ बजे।

छः व्यक्तियों की उपस्थिति में मृत्युस्थल के पास ही, मही नदी के किनारे **मोटा** के शरीर का अग्निसंस्कार किया गया ।

सब कुछ निपटने के बाद श्रीमोटा के देहत्याग का समाचार प्रसिद्ध किया गया ।

सारा गुजरात अवाक् हो गया ।

सभी शोक में डूब गए ।

परन्तु मुक्तात्मा श्रीमोटा आकाश में से मुस्कुराते सभी को आर्शीवाद दे रहे ।

२२ जुलाई १९७६ को श्रीमोटा ने अंतिम पत्रों लिखे । जिस में से चुनिंदा पत्र यहाँ प्रस्तुत हैं ।

'जिस-जिसने मुझे मदद की है, मेरा काम किया है, उन सभी का मैं आभार व्यक्त करता हूँ ।'

'भगवान उनका यश-कल्याण करें ।'

'हमारा हम ने छिपा नहीं रखा है .....'

'उमंग से हम ने किया हुआ है .....'

'गुरुमहाराज जीवित प्राणी है ऐसा नहीं .....'

'जिन्होंने यह मेरा कितकितना काम किया है .....'

ये हैं श्रीमोटा के अंतिम लेख के उद्‌गार ।

कोटि कोटि वंदन हैं, पूज्य श्रीमोटा को ।

॥ हरि:ॐ ॥

प्रभु शरणचरण में रखो रे

(प्रार्थना)

प्रभु, शरणचरण में रखो रे, चरण पड़ूँ ।
रसियाजी अंतरयामी ! मेरे हृदयकमल के स्वामी !
अलबेला प्रेमनामी ! रे, चरण पड़ूँ । प्रभु०

शरणागतवत्सल जानकर, तुम्हें बतायी अंतर कहानी,
तब भी मन रहा अभी मानी रे, चरण पड़ूँ । प्रभु०

बेहूदा सब उसका टालकर, मिला दे गिरिधारी !
पद लगाकर दो ताली रे, चरण पड़ूँ । प्रभु०

हरि ! साधन कुछ नहीं, दिल-प्रेम-भाव के फूल,
बिखेरता हूँ नित तुम्हारे चरणों में, चरण पड़ूँ । प्रभु०

बालक का जोर कुछ नहीं, यदि हो कुछ तो रोना,
उस बल पर मुझे तरना है, चरण पड़ूँ । प्रभु०

'जीवनसंशोधन,' पांचवी आ., पृ. ४०९-४१० – **मोटा**

॥ हरिः ॐ ॥

आरती

ॐ शरणचरण लीजिए, प्रभु शरणचरण लीजिए
पतित को उबार लीजिए (२) कर पकड़ हृदय लगा लीजिए...
ॐ शरणचरण.

मन-वाणी के भाव आचरण में उतरें प्रभु (२)
मन, वाणी और दिल को (२) कृपा कर एक करें...ॐ शरणचरण.

सभी स्वजनों के साथ, दिल में सद्‌भाव जगें, प्रभु (२)
भले अपमान हुए हों (२) तब भी भाव बढ़े...ॐ शरणचरण.

हीन प्रकार की वृत्ति; ऊर्ध्वगमन करने, प्रभु (२)
प्रभुकृपा से मथन करावें (२) चरणशरण पाने...ॐ शरणचरण.

मन के सकल विचार, प्राणयुक्त वृत्ति, प्रभु (२)
बुद्धि की सभी शंकाएँ (२) चरणकमल में द्रवित हो...ॐ शरणचरण.

जैसे भी हो प्रभु, वैसे ही दीखें, प्रभु (२)
मति मेरी खुली रहे (२) स्पष्ट ही परखें...ॐ शरणचरण.

दिल में कुछ भरा हो, उससे सब उलटा, प्रभु (२)
मुझसे कभी न हो (२) ऐसी मति दें...ॐ शरणचरण.

जहाँ जहाँ गुण और भाव, वहाँ दिल मेरा टिके, प्रभु (२)
गुण और भाव की भक्ति (२) मेरे दिल में संचरित करें...ॐ शरणचरण.

मन, मति, प्राण प्रभु । तुम्हारे भाव में तल्लीन रहे, प्रभु (२)
दिल में तेरी भक्ति की (२) लहरे उछलें...ॐ शरणचरण.

– मोटा

साधना-मर्म

१. मुख से या मन में जागृत रूप से जप, साथ ही हृदय-प्रदेश पर ध्यान तथा चेतन चिंतन सह भावात्मक भाव का रटन ।

२. प्रत्येक क्षण में सतत समर्पण : अच्छे एवं बुरे दोनों का ।

३. साक्षीभाव, जागृति, विचारों की शृंखला न जोड़ें ।

४. हो सके उतना अधिक वाचिक और मानसिक मौन रखें, विकसित करो और अत्यधिक शरणभाव जीवन में चेतनापूर्वक का जागृति से विकसित किया करो ।

५. आग्रह प्रभु–चिंतन के अलावा सभी आग्रहों को छोड़ें, नम्रता विकसित करो, शून्य होने का ध्येय रखें ।

६. बहुत भावपूर्ण हृदयस्थ रहकर आर्द्र और आर्तभाव से प्रार्थना करो, भगवान को सभी सुख-दुःख बतलाते रहें, उनके साथ आत्मनिवेदन द्वारा बहुत गहरा निजी संबंध स्थापित करें, मन में कुछ भी विचार न आने दें। खाली रहो ।

७. आ पड़ते काम प्रभु के समझो, जरा भी कचवाट बिना उसे खूब प्रेमपूर्वक करो । बहुत प्रेमपूर्वक करें । प्रत्येक प्रसंग, घटना हमारे कल्याण के लिए ही है और प्रत्येक प्रवृत्ति हमारे अपने विकास के लिए होनी चाहिए । प्रत्येक प्रसंग के पीछे प्रभु का गूढ शुभ संकेत रहा हुआ है ।

८. आत्मलक्षी-अंतर्मुखी बनें, मात्र अपनी दुनिया में रहें । जान-बूझकर अपने आपको न उलझने दें ।

९. पर (अन्य) की सेवा प्रभुसेवा समझें, सेवा लेनेवाले, सेवा देनेवाले पर, सेवा करने का अवसर देकर उपकार करते हैं । राम ने दिया है और राम को दे रहे हैं, वहाँ मेरा-मेरा कहाँ रहा ? तुम्हारा इस जगत में है क्या ?

१०. प्रत्येक कार्य, प्रत्येक बातचीत, व्यवहार हमारे ध्येय को गति दे ऐसे खास हेतु के लिए, हेतु का लक्ष जीवंत रखकर करें । पढ़ते-लिखते समय और प्रत्येक कर्म करते समय भाव की स्मरण धारणाओं का अभ्यास विकसित किया करो ।

११. वृत्ति का मूल खोजो, उसका पृथक्करण करो । उसमें जो मिश्रित हुए बिना उसका तटस्थतापूर्वक और स्वस्थतापूर्वक निरीक्षण करो ।

१२. प्रभु की प्रत्येक कला, सौन्दर्य, रम्यता, विशुद्धता आदि प्रसादिओं में रहे हुए भाव का, उसके-उसके अनुरूप भाव का हमारे में अवतरण होने प्रार्थना करें ।

१३. ऊर्मि, आवेश और मनोवृत्ति को ऐसे ही न जाने दें एवं उसमें मिश्रित भी मत हो जाओ । उसका साधना में उपयोग करो, ताटस्थ्य विकसित करो ।

१४. खाते और पानी पीते समय पर जीवन में चेतनशक्ति के अवतरणभाव की प्रार्थना करना । शौच, पेशाब आदि क्रियाओं के समय पर विकारों, कमजोरियों इत्यादि के विसर्जनभाव की प्रार्थना करना ।

१५. स्थूल का ख्याल त्यागकर सूक्ष्म तत्त्व को नजर समक्ष रखो । वृत्ति की शुद्धि करो, भाव की वृद्धि करो ।

१६. प्रभु सचराचर हैं । 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की भावना विकसित करो ।

१७. प्रत्येक व्यक्ति और वस्तु के उज्ज्वल पक्ष को देखो । किसी के भी काजी न बनो, किसी के पर भी जल्दी अभिप्राय न दो, वाद-विवाद न करो, अपना आग्रह न रखो, दूसरों में शुभ हेतुओं का आरोपण करो, मानसिक और सार्वत्रिक उदारता जीवन में प्रकट करो, अत्यधिक प्रेमभाव विकसित करो, प्रकृति का रूपान्तर करना है, उसे लक्ष में रखकर प्रकृतिवश होनेवाले कर्मों को वश न होकर आगे बढ़ो, फल की आसक्ति त्यागो । स्वयं पर होते अन्यायों, आ पड़ते दुःखों आदि का मूल हम में ही है, ऐसा दृढ़तापूर्वक मानो, गुरु में प्रेमभक्तिभाव दृढ़ किया करो । अभीप्सा, इनकार और समर्पण का त्रिवेणीसंगम उद्‌भव करो, सदा ही प्रसन्नता फैलाओ, कृपा और पुरुषार्थ के युगल को जीवन में उतारो, प्रत्येक कर्म के आदि, मध्य और अंत में प्रभु की स्मृति प्रकट करो, मन को निःस्पंद करो, रागद्वेष निर्मूल करने की जागृति रखो, हुए आध्यात्मिक अनुभवों को नित्य के जीवन में आचरण में लाओ, कहीं भी किसी में से भागें नहीं, जो भी प्रभु-इच्छा से प्राप्त हो, वह प्रभु-प्रसाद समझ कर उसका हर्षपूर्वक सत्कार करो । कहीं भी किसी की तुलना न करो, अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति यह मन का भ्रम है, जीवन-साधना के लिए सब कुछ सानुकूल ही होता है, प्रभुमय—उसके मूक यंत्र—होने की ही एक उत्तेजना अब जीवन में रखो ।

१८. कर्म में, कर्म का महत्त्व नहीं है, परन्तु जीवन के भाव का सतत एक-सा, जीवित चिंतन रहा करे, यह सविशेष रूप से महत्त्व का है । वैसा जीवित अभ्यास कर्म करते हुए प्रत्येक क्षण में विकसित करो ।

- मोटा

पूज्य श्रीमोटा के जीवन का परिचय

जन्म	: ता. ४-९-१८९८ भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी, संवत १९५४
स्थान	: सावली, जिला वडोदरा (गुजरात)
नाम	: चुनीलाल
माता	: सूरजबा
पिता	: आशाराम
जाति	: भावसार
उपनाम	: भगत
१९०३	: कालोल में निवास, गरीबी का आरंभ
१९०६	: मजूरी के काम
१९१५	: तौला की नौकरी
१९१६	: पिता की मृत्यु ।
१९०५ से १९१८	: टुकड़ों में पढ़ाई के साथ कठिन मजदूरी ।
१९१९	: मैट्रिक उत्तीर्ण ।
१९१९-२०	: वडोदरा कॉलेज में ।
दि.६-४-१९२१	: कॉलेज का त्याग ।
१९२१	: गुजरात विद्यापीठ में ।
१९२१	: विद्यापीठ का त्याग । हरिजनसेवा का आरंभ ।
१९२१	: मिरगी की बीमारी से तंग आकर गरुड़ेश्वर के कगार से आत्महत्या का प्रयास, दैवी रक्षा; 'हरिः ॐ' जप से रोग मिटाने का सफल प्रयोग ।
१९२२	: वसंतपंचमी को श्रीबालयोगीजी द्वारा दीक्षा । श्रीसद्गुरु केशवानंद धूनीवाले दादा के दर्शन के लिए सांईखेड़ा गए । रात्रि को श्मशान में साधना और दिनभर प्रभुप्रीत्यर्थ हरिजनसेवा ।
१९२३	: 'तुज चरणे' तथा 'मनने' की रचना ।
१९२४	: डाकोर में श्रीनथ्थुराम (मगरमच्छ) से मिलन, हिमालय की प्रथम यात्रा ।
१९२६	: विवाह - हस्तमिलाप के अवसर पर समाधि का अनुभव ।

हरिद्वार कुंभमेले में श्रीबालयोगीजी की तलाश ।

१९२७ मार्च : हरिजन आश्रम, बोदाल में सर्पदंश –परिणाम स्वरूप 'हरि:ॐ' जप अखंड हुआ ।

१९२८ : 'तुज चरणे' के प्रथम संस्करण का प्रकाशन ।

१९२८ : दूसरी हिमालय-यात्रा ।

१९२८ : साकुरी के श्रीउपासनीबाबा का नडियाद में आगमन, उनके आदेश पर साकुरी गये, वहाँ मलमूत्र के बिस्तर में भूख-तरस, सखत पत्थरमार सहन करते लगभग १०-११ दिन ध्यान, समाधि-अवस्था में ।

१९३० : मन की नीरवता का साक्षात्कार ।

१९३० से ३२ : इस दौरान साबरमती, विसापुर, नासिक और यरवडा जेल में । हेतु देशसेवा का नहीं, साधना का । कठोर परिश्रम और लाठी चार्ज के दौरान प्रभुस्मरण-मौन । विद्यार्थियों को समझाने के लिए विसापुर जेल में सरल गुजराती भाषा में श्रीमद् भगवद्गीता को लिखा–'जीवनगीता' ।

१९३३ : तीसरी हिमालययात्रा बर्फ में रहते महात्मा मिले ।

१९३४ : सगुण ब्रह्म का साक्षात्कार । मल-मूत्र के आधार पर पचीस दिन की साधना ।

१९३४ से १९३९ : इस दौरान हिमालय में अघोरीबाबा की मुलाकात । बाद में नर्मदा धुंआँधार के प्रपात के पीछे की गुफा में साधना । चैत्र मास में ६३ धूनियाँ जलाकर नर्मदा किनारे खुले में शिला पर नग्न बैठकर साधना । कराची में नर्क चतुर्दशी की रात्रि को समुद्र में शिला पर ध्यान, चालीस दिन के रोजे, 'समुद्र में चले जाने का सांईबाबा का हुक्म और ईद के दिन पूरे शहर में नग्न अवस्था में घूमकर घर जाने का हुक्म । शिरडी के सांईबाबा के प्रत्यक्ष दर्शन–आदेश–साधना के अंतिम चरण का मार्गदर्शन ।

१९३९ : दि. २९-३-३९ : रामनवमी विक्रम संवत १९९५ काशी में निर्गुण ब्रह्म का साक्षात्कार । हरिजन सेवक संघ से त्यागपत्र । 'मनने' के प्रथम संस्करण का प्रकाशन ।

१९४० : दि. ९-९-४० : हवाई मार्ग से अहमदाबाद से कराची जाने का गूढ़ आदेश ।

१९४१ : माता का अवसान ।

१९४२ : हरिजन सेवक संघ से अलग होने पर भी हरिजन कन्या छात्रालय के लिए मुंबई में चन्दा इकट्ठा किया । दो बार सख्त पुलिसमार—देहातीत अवस्था के प्रमाण ।

१९४३ : २४, फरवरी गाँधीजी के पेशाब के जहरीले जन्तुओं का अपने पेशाब में दर्शन । नैमित्तिक तादात्म्य का अनुभव ।

१९४५ : हिमालय की यात्रा - अद्‌भुत घटनाएँ ।

१९४६ : हरिजन आश्रम, अहमदाबाद मीराकुटिर में मौनएकांत का आरंभ ।

१९४७ : आश्रम स्थापने का विचार ।

१९५० : दक्षिण भारत के कुंभकोणम् (तामिलनाडु) में कावेरी नदी के किनारे हरि:ॐ आश्रम की स्थापना । (सन १९७६ में श्रीमोटा के देहत्याग के बाद आश्रम बंद कर दिया गया ।)

१९५४ : सूरत तापी नदी के किनारे कुरुक्षेत्र जहाँगीरपुरा के श्मशान में मौनएकांत का आरंभ ।

१९५५ : दि. २८-५-१९५५ : जूना बिलोदरा, शेढी नदी के किनारे, नडियाद, गुजरात, हरि:ॐ आश्रम की स्थापना ।

१९५६ : दि. २३-४-१९५६ सूरत (गुजरात) तापी नदी के किनारे, कुरुक्षेत्र जहाँगीरपुरा में हरि:ॐ आश्रम की स्थापना ।

१६-८-१९५९ : हरि:ॐ आश्रम, सूरत में मौनमंदिर का उद्‌घाटन ।

१९६२ : समाजोत्थान की प्रवृत्ति, उत्सव मनाने की संमति ।

१९७० से १९७५: शरीर में पीडाकारी वेदना के साथ सतत प्रवास, वार्तालाप और साधना का इतिहास, श्रद्धा, निमित्त, रागद्वेष, कृपा आदि भाववाही विषयों पर लेखन - प्रकाशन ।

१९७६ : १९-७-१९७६ देहत्याग का संकल्प, हरि:ॐ आश्रम नडियाद, २२-७-१९७६ देहत्याग विधि का प्रारंभ : सायंकाल ४ बजे से फाजलपुर (वडोदरा, गुजरात) मही नदी के किनारे श्री रमणभाई अमीन के फार्म-हाउस में ।
२३-७-१९७६ देहविसर्जन श्री रमणभाई अमीन के फार्म-हाउस नजदिक मही नदी के किनारे फालजपुर (जि. वडोदरा, गुजरात)

॥ हरि:ॐ ॥

हरि:ॐ आश्रम में उपलब्ध हिंदी पुस्तकों का लिस्ट

क्रम	पुस्तक	प्र.आ.
१.	पूज्य श्रीमोटा एक संत	१९९७
२.	कैंसर का प्रतिकार	२००८
३.	सुख का मार्ग	२००८
४.	दुर्लभ मानवदेह	२००९
५.	प्रसादी	२००९
६.	नामस्मरण	२०१०
७.	हरि:ॐ आश्रम (श्रीभगवान के अनुभव का स्थान)	२०१०
८.	श्रीमोटा के साथ वार्तालाप	२०१२
९.	विवाह हो मंगलम्	२०१२
१०.	बालकों के **मोटा**	२०१२
११.	विद्यार्थी **मोटा** का पुरुषार्थ	२०१२
१२.	मौनमंदिर का मर्म	२०१३
१३.	मौनमंदिर का हरिद्वार	२०१३
१४.	मौनएकांत की पगडंडी पर	२०१३
१५.	मौनमंदिर में प्रभु	२०१४

●

English books available at Hariom Ashram Surat.
January - 2020

No.	Book	F. E.
1.	At Thy Lotus Feet	1948
2.	To The Mind	1950
3.	Life's Struggle	1955
4.	The Fragrance Of A Saint	1982
5.	Vision Of Life - Eternal	1990
6.	Bhava	1991
7.	Nimitta	2005
8.	Self-Interest	2005
9.	Inquisitiveness	2006
10.	Shri Mota	2007
11.	Rites and Rituals	2007
12.	Namsmaran	2008
13.	Mota for Children	2008
14.	Against Cancer	2008
15.	Faith	2010
16.	Shri Sadguru	2010
17.	Human To Divine	2010
18.	Prasadi	2011
19.	Grace	2012
20.	I Bow At Thy Lotus Feet	2013
21.	Attachment And Aversion	2015
22.	The Undending Odyssey (My Experience Of Sadguru Sri Mota's Grace)	2019
23.	Pujya Shri Mota Glimpses of a divine life (Picture Book)	2020
24.	Genuine Happiness	2021

●

॥ હરિ:ૐ ॥

॥ हरिः ॐ ॥

बालकों के मोटा

‘जो जो संस्कार वच्चे को वचपन में मिलते है, वह सारे संस्कार उसके हृदय में सूक्ष्म रूप से समाहित – प्रस्थापित हो जाते है और वह संस्कार अचानक से किसी भी समय जागृत होते है !’

– श्रीमोटा

‘जीवनपगथी’, पृष्ठ ८४

* * * * * *

हमारे शास्त्र कहते हैं कि ‘बच्चों के लिए मातापिता का प्यार अपरिहार्य है !’

– श्रीमोटा

‘शेष–विशेष’, पृष्ठ ९९